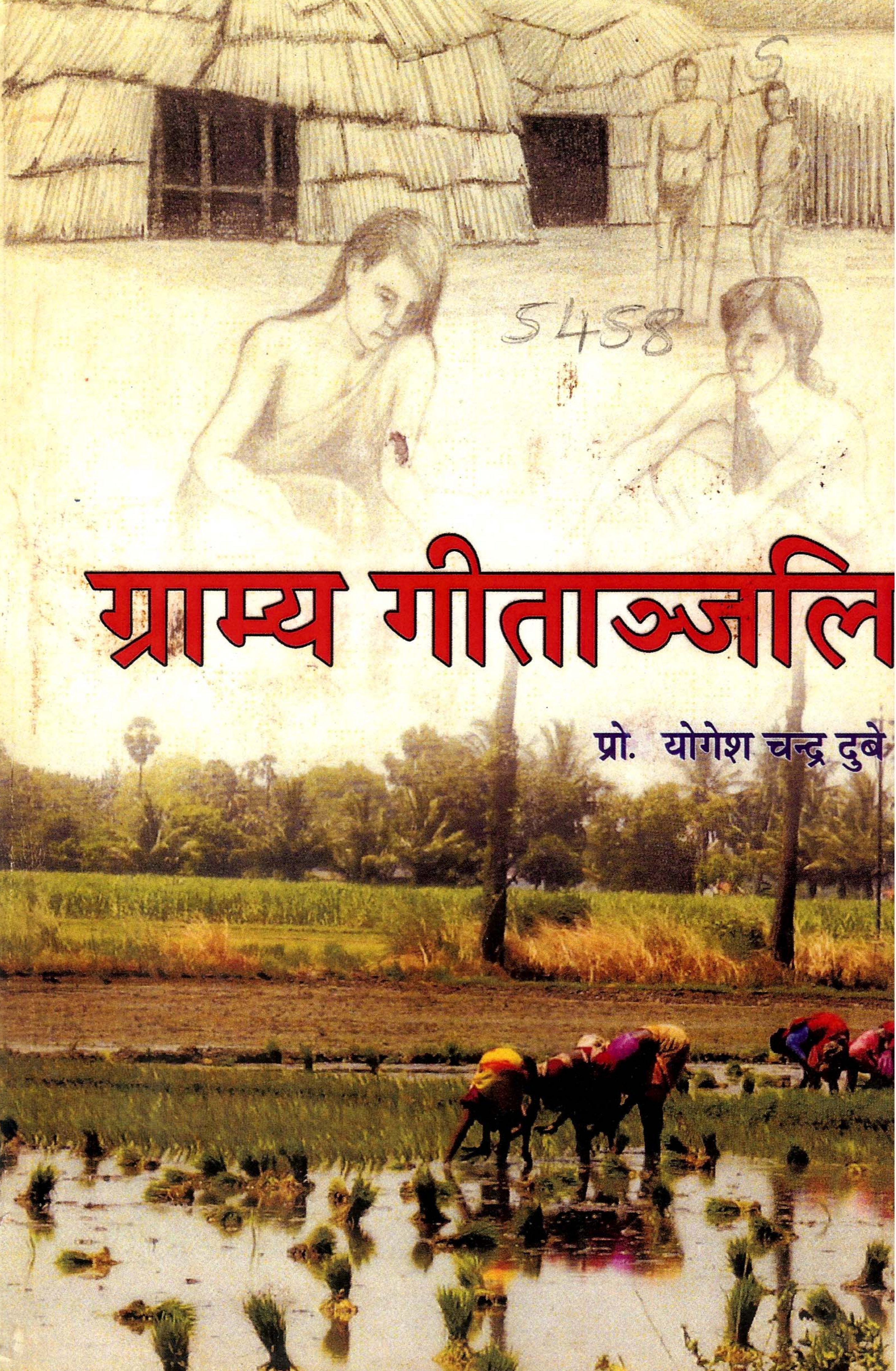


ग्राम्य गीताञ्जलि

प्रो. योगेश चन्द्र दुबे

ग्राम्य गीताञ्जलि

(51 गीतों का संग्रह)

ग्राम्य गीताञ्जलि

(51 गीतों का संग्रह)

प्रो. योगेश चन्द्र दुबे
कुलपति
जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय
चित्रकूट (उ.प्र.)

शिव भारती पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
इलाहाबाद (उ.प्र.)

ISBN : 978-81-88616-00-1

प्रकाशक : शिव भारती पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
फुव्वारा चौराहा ममफोड़ गंज
इलाहाबाद-211002 (उ.प्र.)

मूल्य : 200.00

प्रथम संस्करण : 2013
द्वितीय संस्करण : 2016
मुद्रक : शिवानी आर्ट प्रेस
शाहदरा, दिल्ली-110032

Prof. Rajendra Mishra
M.A. D.Phil. (Alld.) D. Litt. (Shimla)
Ex. Vive-Chancellor
Sampurnanand Sanskrit University
Varansi-221002 (U.P. INDIA)

Grams : "SHRUTAM"
Phones :
Office : (0542) 2204089
: (0542) 2204213
Resi. : (0542) 2206617
: (0542) 2206617

नान्दीवाक्

मेरे अत्यत्न प्रिय एवं मेधावी शिष्य डॉ. योगेश चन्द्र दुबे, आचार्य एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट (उ.प्र.) द्वारा प्रणीत काव्य संग्रह 'ग्राम्य गीतांजलि' का प्रकाशन हो रहा है, यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। किसी प्रतिभाशाली कवि की रचना के प्रकाशन का अर्थ होता है उसकी कवित्व प्रतिभा का लोकार्पण तथा उसकी संस्कारिक अंतः ऊर्जा का प्रकाशन।

योगेश चन्द्र साहित्य शास्त्र के उभय पक्षों काव्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र के नैष्ठिक अधीती रहे हैं। इन्होंने आचार्य क्षेमेन्द्र के महाकाव्य रामायणमञ्जरी पर अत्यंत उत्कृष्ट एवं श्लाघ्य शोध प्रबंध लिखकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डी. फिल्. उपाधि प्राप्त की। यह भी एक विस्मयावह तथ्य है कि योगेश चन्द्र के हृदय में प्रतिष्ठापित काव्य भावना का यह उन्मेष थोड़े विलम्ब से प्रकट हुआ। भावयित्री प्रतिभा हृदय के किसी गह्वर में तिरोहित रही और उसे कारयित्री प्रतिभा का साहचर्य नहीं मिला। इसका एक मात्र कारण है कवि का अपने अध्ययन के प्रति हार्दिक समर्पण भाव तथा जीवन लक्ष्य प्राप्त करने के लिए उसका एकप्रख्य होना।

परंतु मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम एवं जगज्जननी जानकी जी की चरणधूलि से प्रति कण पवित्रित, मनोरम वनराजियों एवं शैलदरियों से ओत-प्रोत चित्रकूट की पावन भूमि में आते ही वह अंतः प्रसुप्त काव्यांकुर सहसा कंदलित हो उठा और देखते ही देखते न्याग्रोधकल्प बन गया।

आज डॉ. योगेश चन्द्र दुबे की गणना अपनी पीढ़ी के सिद्ध एवं लोकप्रिय कवियों में हो रही है, जिसे जान-सुन कर मैं भी आत्मीय गौरव का अनुभव करता हूँ। **ग्राम्यगीतांजलि** में तीन खण्ड हैं **गीतमंदाकिनी, गीतपयस्विनी** तथा **गीतगंगा**। गीतमंदाकिनी एवं गीतपयस्विनी में कवि की लोकभाषापरक रचनाएँ संकलित हैं। यह अत्यंत आर्श्चमिश्रित हर्ष का विषय है कि योगेश अवधी तथा भोजपुरी बोलियों में समान गति से काव्य रचना कर रहे हैं। मंच पर उनकी प्रस्तुति, विशिष्ट वैयक्तिक शैली के कारण अत्यन्त हृदयग्राही होती है। उनकी वाणी में एक नैसर्गिक सम्मोहन है।

वस्तुतः उ.प्र. के पूर्वांचल की प्रारम्भ सीमा पर अवस्थित जौनपुर जनपद, भाषायी दृष्टि से अवधी तथा भोजपुरी का संगम स्थल है। इस जनपद की जौनपुर, मछलीशहर, बदलापुर तथा शाहगंज तहसीलों में जहाँ शुद्ध अवधी बोली जाती है, वहीं काशी की सीमा से सटी केराकत तथा मड़ियाहूँ तहसीलों में भोजपुरी का सुस्पष्ट प्रभाव है।

योगेश को इन बोलियों में कवित्व के संस्कार अपनी माटी से ही मिले हैं और उनकी काव्यात्मक भावनाओं को विविध वर्ण्य-विषय मिले हैं अपने ग्राम्य परिवेश से, अपने जवार से। वैसे भी शहर यदि गद्य है तो गाँव पद्य। शहर यदि विचारप्रवण निबंध है तो गाँव लय एवं धुन से बोझिल गीत। गाँव-शहर का यह अंतर संभवतः साहित्य के मानदण्ड से स्पष्ट हो जाता है। मंदाकिनी एवं पयस्विनी खण्डों में संकलित डॉ. योगेश की मार्मिक कविताएँ इसका प्रमाण हैं।

गीतगंगा खण्ड में कवि प्रणीत खड़ी बोली की रचनाएँ हैं जो प्रायः चिंतन प्रधान हैं। इन रचनाओं में सरसता का स्थान प्रौढ़ि ने ले लिया है। डॉ. योगेश की कविताओं में लोकगंधा प्रकृति का रमणीय उच्छ्वास है, गाँव-गिराँव की सौंधी माटी की गंध है और सामान्य समाज की तीती-मीठी अनुभूतियाँ हैं। इन कविताओं में कुछ भी ऐसा नहीं जो कृत्रिम अथवा आरोपित कहा जा सके। सब कुछ स्वतःस्फूर्त एवं निसर्गजात है।

मैं साहित्य और सहृदय समाज की ओर से डॉ. दुबे के काव्यग्रंथ का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी उनकी उत्तरोत्तर प्राञ्जल काव्य रचनाएँ आती रहेंगी, जिनसे माँ भारती का भंडार समृद्ध होगा। इन्हीं आशीवर्चनों के साथ अपने नान्दीवाक् को विश्राम देता हूँ।

अभिराज राजेन्द्र मिश्र

शिमला
हिमाचल प्रदेश

जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय

चित्रकूट (उ.प्र.) पिन-210204

संस्थापक एवं महामहिम कुलाधिपति (आजीवन)
धर्मचक्रवर्ती महामहोपाध्याय श्रीतुलसीपीठाधीश्वर
जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी
श्रीराम भद्राचार्य जी महाराज

फोन : (05198) 24413, 24461
फैक्स : (07670) 65478

श्री सीतारामौ विजयेते

'अवधी योगेश चन्द्र' कृत 'ग्राम्यगीतांजलि'

मन्दाकिनी-पयस्विनी-गीतगंगा के विभाग भल,
ललित सुगीत कर जतन बनाई है।
भनिति भदेश पै सुदेशी भावना ते भरी,
ग्रामवधू जो निरखि दीठि ललचाई है ॥

घुँघट लसित चारु वदन अँजोरिया सी,
पेखि-पेखि सुषमा सुमनहिं चुरायी है।
'अवधी योगेश चन्द्र' रचित सुख अवधी,
निरवधि काव्यविधि **'अवधी'** में गायी है ॥

कतउँ **'अवधी'** में कतउँ चढ़ी **खड़ी बोलिहूँ** में,
कतउँ **भोजपुरी** के सलोने महुअन बीच,
मधुप मनोज्ञ भाव अली दरसायी है।
कतउँ-कतउँ भक्ति सुविराग ज्ञानवीथिन में,
बीहरि-बीहरि काव्य छटा छहरायी है ॥

भाषा क प्रभाव जैसे सावनीं गंगा क पूर,
मीठ-मीठ भाव के मिठास में बनायी है।
कविता क शोभा लागे गाँवरी बहुरिया सी,
हेरि-हेरि हियरा हहरि हरसायी है ॥

तीनिहुँ विभाग वर यूथिका के बाग बीच,
बाँटत बटोहिनि के घेरि-केरि आयी है।
'अवधी योगेश चन्द्र' कृत ग्राम्यगीतांजलि,
'रामभद्राचारज' के मनवाँ लुभायी है ॥

इति मंगलमाशास्ते
जगद्गुरु श्री रामान्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य

जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय

चित्रकूट (उ.प्र.) पिन-210204

फोन : (05198) 24413, 24461
: (07670) 65478
फैक्स : (07670) 65478

प्रो. एस. एन. दुबे
कुलपति

'ग्राम्यगीतांजलि' के गीतों की धुन और तर्ज पर मन बरबस ही थिरक उठता है और फिर मुखर होकर गुनगुनाने लगता है इसके सुमधुर गीतों को। इस गीतसंग्रह में पाठक या श्रोता को वे सारे भाव एक जगह ही मिल जाते हैं जिनकी चाह में उसका मन प्रायः भटकता रहता है। मन को चाहिए एक निर्मल एवं आध्यात्मिक शांति जिसकी पूर्ति करती है गीतमंदाकिनी। इसमें कवि ने चित्रकूट के प्राकृतिक सौंदर्य वर्णन के साथ ही भगवान श्री सीताराम जी के प्रति जो भाव अर्पित किए हैं वह ग्राम्यगीतांजलि का प्राणतत्त्व हैं।

गाँव-गिराँव की बातें, वहाँ का रहन-सहन, चलन-प्रचलन, खेती-किसानी आदि सारी चीजें उसे बहुत याद आती हैं जो गाँव एवं नगर दोनों परिवेशों से सुपरिचित एवं जुड़ा हो। इन्हीं भावनाओं में रचे-बसे कवि योगेश को मधुमास आने पर गाँव की जब याद आती है तो गाने लगता है कवि का भावुक मन

आओ फिर लौट चलें अपने उस गाँव में
शीतल दोपहरी जहाँ वासंती छाँव में।

× × ×

ऊबा मन भीड़ भरी विरस काँव-काँव में ॥

इसी परिवेश में गाँव की माटी से जुड़े गीतों की दूसरी धारा **'गीत पयस्विनी'** को बहाते हुए योगेश जी ने सामाजिक समस्याओं से जुड़े गीतों की तीसरी धारा 'गीत **गंगा'** भी बहायी है। इस प्रकार **गीतमंदाकिनी, गीतपयस्विनी** एवं **गीतगंगा** के त्रिवेणी से **'ग्राम्यगीतांजलि'** का जो गीत संगम योगेश जी ने तैयार किया है उसमें प्रत्येक भावुक चाहे डुबकी लगाए, चाहे गोते लगाए, चाहे किनारे पर नहाये या बीच धार में अवगान करे, सर्वविधि आनंद रस का पान ही करता रहेगा।

कवि योगेश मेरे अत्यन्त प्रिय एवं पुत्रवत् वात्सल्य भाजन हैं। मैं इनकी प्रतिभा एवं विद्वता से लगभग 25 वर्षों से भी अधिक समय से सुपरिचित हूँ। इनकी सुमधुर वाग्धारा से तो प्रभावित था ही, ग्राम्यगीतांजलि ने इनके कविस्वरूप से परिचित कराकर अभिभूत कर दिया। साहित्य जगत् में ग्राम्यगीतांजलि को ढेर सारी प्रशस्तियाँ मिलें तथा कविवर योगेश को साहित्य मनीषियों का बहुत-बहुत आशीष प्राप्त हो। यही मेरी मंगलकामना है।

प्रो. एस. एन. दुबे

प्रो. मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी
कुलपति

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय
बी. एम बिड़ला शोध संस्थान परिसर,
देवास रोड, उज्जैन 456010 (म.प्र.)
दूरभाष कार्या. : (0734) 2526044
फैक्स नं. : 2524845

अंतर्ध्वनि

ग्राम्य गीताञ्जलि प्रो. योगेश चन्द्र दुबे की धरती के मुखरित होने वाले स्वर हैं। इनमें धरती की ममता, निजता की पराकाष्ठा, बोली-बानी की मिठास घर-परिवार का छोह, देवी-देवताओं की मन्नत-मुराद, नाते-रिश्तों की बहार साद्यन्त भरी रहती है। श्री दुबे संस्कृत के अधीती विद्वान हैं इसीलिए संस्कृत पद्य बंधों की भावनाएँ लोकभाषा में उतार दी हैं। इनके गीतों में बहुरंगी ग्रामीण भावनाएँ मुखरित हुई हैं। सुख-दुःख में मिट्टी के बोल ही निकलते हैं। श्री दुबे की भावनाएँ इन गीतों में तरङ्गित हुई हैं। गीत मंदाकिनी उनके राम के लिए, उनकी जीवन की मंदाकिनी को अपने चित्रकूट में रमाने के लिए रचनाकार गाता चला गया है। गाँव, गाँव का जीवन, गाँव की यादें गाते-गाते पयस्विनी बन जाती है। अपनी निजी प्रवृत्ति, निजी चिंतन और स्वयं का प्रकटीकरण गीत बनते हैं और जीवन के सागर में लहराते रहते हैं गीत जल बनकर। भावनाओं की तीव्रता अनेकों प्रसंगों में फूट पड़ती है और वे भाव लोकजीवन के जब होते हैं तो लोकभाषा में उतर कर ही शोभा देते हैं। प्रो. योगेश चन्द्र दुबे की लोकाग्रही वृत्तियों को उनकी कवित्व वृत्ति ने गीतों में, धुनों में, सुरों में उतारा और वे मन के मीत बनकर, जन के गीत बनकर परिवेशों को समेट लेते हैं, प्रवर्तनों को आयाम दे देते हैं, ग्राम्य को शिष्ट कर देते हैं यह अञ्जली उनकी अपनी है, ये भावजल उनके अंतस के हैं, ये शुद्ध तरंग उनकी अपनी माटी की है अनन्त काल से ये माटी बोलती आ रही है, किंतु उसकी पहचान कुछ लोगों को ही होती है। इसके बोल अनपढ़ कण्ठों में अमर रहते हैं, जन्मते ही फूटते हैं, दादरा, कहरवा के तालों में, तीजा-फगुआ के त्यौहारों में, बरुआ काज के प्रसंगों में ये रोके नहीं रुकते। सारे रिश्ते-नाते, सारे देवी-देवता, पुरखे-पद्धतियाँ इनके बोल में बंधे रहते हैं। श्री दुबे का लोक इनके गीतों में उमड़कर यहाँ उनके अंतस की छवि को रूपाङ्कित करने को आतुर है। इनकी सर्जना को अनेकशः साधुवाद और बधाई हो।

प्रो. मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट
MAHATMA GANDHI CHITRAKOOT GRAMODAYA
VISHWAVIDALAYA, CHITRAKOOT
District-Satna (M.P.) 485 780, INDIA
(Established by the Govt. of Madhya Pradesh thtough
legislature by Act No. 09 of year 1991)
Ph. : 07670-265413 (O), Fax : 17670-265340, M. : 9424907742
e-mail : kbpandeya@yahoo.com
Web site : www.mgcgvchitrakoot.com, e-mail : mgcgv@rediffmail.com

प्रो. कृष्ण बिहारी पाण्डेय
कुलपति

अनुज को आशीष

ग्राम्य गीतांजलि के रचनाकार प्रो. योगेश चन्द्र दुबे मेरे छोटे भाई जैसे हैं। उनकी रचनाओं को पढ़कर और उनके ही कण्ठ से गाये हुए उनके गीतों को सुनकर अपनेपन का जो रोमांच मन में उठता है उसकी अभिव्यक्ति कठिन है। अतः उनकी रचना के बारे में मैं अत्यन्त संकोच के साथ अपना अभिमत दे रहा हूँ।

योगेश जी ने **गीत पयस्विनी** का अपना गीत 'गाँव का अपनापन' मुझे गाकर सुनाया। वे गा रहे थे–

"लौटा दो लौटा दो मेरे गाँव का अपनापन।
कहाँ गयी वो थाती माटी कहाँ वो भोलापन ॥"

मुझे लग रहा था वे मेरी ही कविता की ये पंक्तियाँ पढ़ रहे हैं–
कृपा आपकी,
मेरे गाँव से महानगर तक सड़क बनायी,
कहाँ ले गए, किन्तु बता दो, वो पगडंडी जिस पर चलकर मैंने थी ये मंजिल पायी।

अपना गीत गाते-गाते जब वे कविता के पहले पद पर पहुँचे, और गाने लगे–
"सूखे पोखर ताल-तलैया,
दुबला-ढेकुली चले न भैया।
सूखे कूप रहट हुए गायब,
चरसे का न चलन ॥
लौटा दो लौदा दो मेरे गाँव का अपनापन।"

तब मेरी आँखों के सामने अपनी कविता की ये पंक्तियाँ तैरने लगीं–
"कहाँ ले गये ताल-तलैया बाग-बगीचे।
कहाँ ले गए टीले-खंदक ऊँचे-नीचे ॥
कहाँ ले गये बरमबाबा का बो देवथाना।
आते-जाते जहाँ हमें था शीश नवाना।"

गीत पूरा होते-होते उनका गला भर आया और मेरी आँखों में भी आँसू आ गए। कुछ देर के लिए हम दोनों अपने-अपने गाँव पहुँच गये थे और पा रहे थे कि हमारा बहुत कुछ खो गया है और यह कि अगली बार हम गाँव आयेंगे तो न हमें गाँव चीन्हेगा और न हम गाँव को। गाँव में जनमे-पले हर व्यक्ति की यही व्यथा है। इसी के नाते हम भाई-भाई हैं। **गीत गंगा** के अपने पन्द्रह गीतों में डॉ. दुबे ने अपने जीवन के संघर्ष को चित्रित किया है। यह संघर्ष हर उस भारतीय नौजवान का संघर्ष है जो अपने परिश्रम से अपनी राह बनाने की कोशिश करता है। ठोकर खाता है, गिरता है और फिर उठकर खड़ा हो जाता है। अपनों से ठगा जाता है फिर भी विश्वास की डोर थामे रहता है। किंतु जब देश की अस्मिता पर, देश के अस्तित्व पर चोट पहुँचती है तो विचलित हो जाता है और चिल्ला पड़ता है–

"आन्हर माई-बाबू बाटें बउरहा बा भइया,
केकरे भरोसे खेई मंजधारे नइया।
बँचऽ! पतवार अब चोरवन के हाँथ बाय,
देशवाँ हमार नरके में चला जात बाय ॥"

गीत मंदाकिनी के पच्चीस गीतों में उन्होंने ईश-वंदना की है, देवी-वंदना की है, शारदा-वंदना की है, हनुमत-वंदना की है, चित्रकूट को प्रणाम किया है, मंदाकिनी को अर्घ्य दिया है और स्मरण किया है 'नित राम-चरित गुन गायक' संत गोस्वामी तुलसी दास का जिनके जन्म से माँ हुलसी की कोख अमर हो गई।

किन्तु सहज गीत गाते-गाते कवि जब पाता है कि सिया-राम-लखन तो चित्रकूट में हैं ही नहीं, तो वह बउरा जाता है और रो-रोकर गाने लगता है–

"फटिकशिला पै खोजले खोजे अनुसुइया,
वन-वन खोजे, सिया-राम-लखन-भइया।
खोजतइ बितल आठों याम,
नाहीं मिले कहूँ सीता राम।
जियरा बाउर भइले.......॥"

मधुर **अवधी गीतों** के सर्जक अपने ऐसे यशस्वी अनुज को अनंत आशीष!

प्रो. कृष्ण बिहारी पाण्डेय

अक्षरों की अँजुरी

कवि की ग्राम्यगीतांजलि के शब्दों को मेरे अक्षरों की अँजुरी विमर्श करती है कि– **गीत मंदाकिनी :** मनुष्य की आस्तिकता को संबल प्रदान करने वाली कविताएँ हैं। राम की उनींदी आँखें, थके पाँव, सूखते अधरों तथा अंग-अंग से बहते पसीने से लथपथ राह चलते राम से भावित होकर कवि कहता है–

रहिया में तोरे बहु घमवाँ लगल बाय,
गोड़वा पसीना तोरे मुड़वा चढ़ल बाय।

कवि, अपने हृदय की मंदाकिनी के तट पर बिठाकर राम-सीता, लक्ष्मण के मुख को धोकर, अवधी भाषा के लालित्य का फलाहार कराता है। यह सचमुच रसमय है। चित्रकूट की धरती से ऐसा लगाव, ऐसा प्यार, दुलार–

'ऋषि-मुनी सब इहवँइ बाटें, हमहूँ रहब सिय-रानी
रतिया इहीं बितउबइ ना
सोना चित्रकूट कइ मटिया।'

और जब राम एकाएक, चित्रकूट छोड़कर चले जाते हैं, तब कवि की विकलता भोजपुरी भाषा में प्रस्फुल्लित होकर करुण रस के पुटपाक को कितना दाहक बना देती है। वस्तुतः कवि की कविताई में अकूत गहराई आ जाती है :

बेरिया न खांइँ वानर, खांइँ नाहिं चनवा
आजु न कुलाँच भरत, बाने ई हिरनवाँ।
असुँवा ढरत बैठल स्वान ॥

के समय पाठक की आँखें भी तालाब हो जाती हैं।

गीत पयस्विनी : गाँव का जीवन, गाँव का सौंदर्य, वहाँ के रहने वालों की रहाइस, भोर-साँझ, उँजियारी, गुंग-गुबार और गोरी की गगरी-रसरी के प्राण घोष के साथ–

मङरू कक्का की वो मड़ैया
खरिहाने की रात जुन्हैया
भिनुसारे में रम्हाती गैया ॥

को खोजते हुए कवि योगेश आगे बढ़ते हुए पाना चाहते हैं–

दूध, दही, घी, छाँछ करोनी।

घुघनी, रस, आलू की सलोनी।

कोलहाड़े में पकते गुड़ की महक का सौंधापन।

और यह सब न पाकर कवि दुखी मन से नदी की ओर जाता है, तो उसके मन का रस परिवर्तन होता है–

अँखिया से बात करइँ चुप्पइ-चुप्प,

नदिया नहाए गउवाँ की गोरिया, जइसे मछरिया पानी में...।

यहाँ निराला की पंक्तियाँ सजीव हो उठती हैं–**यह घाट वही जिस पर रोज नहाती थी धँसकर, आँखें रह जाती थीं फँसकर।** निराला की पंक्तियों में धँसकर' 'फँस कर' हिंदी साहित्य का एक नया मुहावरा है। यह कायिक सौंदर्य का गीत काफी सराहा गया लेकिन गाँव की गोरी के संवाद के लिए कवि ने जिस व्यंजना शक्ति का प्रयोग किया–**'अँखिया से बात करइँ चुप्पइ-चुप्प'**। प्रेम संवाद की इतनी घनीभूत स्थिति उपजाने में कवि को कितनी अतल गहराई में उतरना पड़ा है। 'चुप्पइ-चुप्प' शब्द आंचलिक भाषा का मर्मभेदक शब्द है।

सौंदर्य वर्णन में कवि को महारथ हासिल है। गरीब मजदूरिनी का चेहरा दूइज के चाँद सा निःकलंक, कोमल, मुग्धावस्था, नवोढ़ा के ताजे यौवन का वर्णन हृदय में सुरसुरी भरता है। कवि सौंदर्य की रंगोली सजाने, विम्ब विधान एवं चित्रों को उकेरने में बड़ी सफलता अर्जित की है–

मुड़वा क बोझवा अउ बाली है उमरिया,

ऊँच-नीच भुइयाँ पे लचके कमरिया।

कवि जब घर, आँगन, परिवार और रिश्तों की ओर वापस आता है तो उसको विदा होती हुई लड़की की डोली मिलती है। लड़की ज्यों-ज्यों बड़ी होती है, माँ-बाप के मानस में विविध प्रकार की चिंताएँ उभरने लगती हैं। सच तो यह है कि नारी का उदय और अस्त दोनों ही करुणा और धिक्कार से भरा है। कोख से चिता तक की यही कहानी है। विदा होते हुए लड़की कहे भी तो क्या? वह यह कहते हुए चली जाती है–

भइया के रखलू तूँ अपने हि छहवाँ,

बहिनी के दिहलू निसारि हो।

लेकिन, कवि के हृदय की भावाभिव्यक्ति, सबके हृदय को तरल कर देती है, जब बहन डोली में बैठते-बैठते अपनी सम्पूर्ण उम्र भाई के लिए सौंप जाती है–

जुग-जुग जिय भइया, लेइ मोर उमिरिया।

इस करुण रस से निकलकर जब कवि खेतों की लहलहाती फसलों की ओर जाता है तो भाव रस और आनंद रस के झोंके से उदास मन तरो-ताजा हो जाता है—

रतियाँ बहइ पुरवइया झकझोर बबुआ
नीक लागे गउवाँ...।

गीत गंगा : व्यंग्य में दर्द और दर्द में व्यंग्य कहना सबके बस की बात नहीं है—

भोरवइँ उठि रामहिं राम जपे,
दिन रावन ही क सुराज मिला।

या

'लगी कुएँ में आग पानी क्या करे'?

ऐसे मुहावरे कविता को शक्ति प्रदान करते हैं। पुनश्च,

मेरे मन मीत गीत कौन-सा सुनाऊँ,
दुखडे सुनाऊँ या सुख को गिनाऊँ?

ऐसी कविता अनक्षरी दर्द के साथ, चिंथे घूँघट, दागदार अंग के सवालों की संदेश वाहिका हैं। गीत गंगा की कविताएँ समाज से सीधे मुठभेड़ करती हुई स्पष्ट उत्तर चाहती हैं। समाज में व्याप्त धुंध, कुहरा—काइयाँपन—लुच्चई के दर्द से बेहाल कवि—

सो न जाये जवानी कहीं देश की
जागरण के लिए गीत गाने लगे।

युवकों की भास्वरता के लिए गीत गाते हुए राष्ट्र के ध्वज वंदन के साथ अपनी आस्तिकता और निष्ठा व्यक्त करता है।

डॉ. योगेश चन्द्र दुबे प्रख्यात एवं निष्णात कवि हैं। मंच से लेकर पुस्तक तक अपनी कविताओं के माध्यम से हर आम और खास के हृदय में उतरकर सबके प्रिय और परिचित हो गए हैं।

मैं दण्डी की इस बात से सहमत हूँ कि यह सारा त्रैलोक्य घोर अंधकार में डूबता रहता, यदि शब्द के आह्वान की ज्योति संसार को उद्‌भासित न कर देती और यह भी सच है कि लोक-यात्रा कवि के वचनों के अधीन है। इसी अधीनता के चलते कवि डॉ. दुबे ने हम सबको अपने आधीन किया है। इस बात को स्वीकार करना पड़ेगा कि लेखनी की सिद्धि और बोलने की सिद्धि डॉ. दुबे के व्यक्तित्व में पूर्णतया समाहित है।

अंत में बस इतना कहना चाहता हूँ कि कवि की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए माँ शारदे—कवि के मन की राग को भाषा के सार देकर, छंदों के तार में निबद्ध

कर, कविता को धार देकर, रस से भिगोकर प्रत्येक गीतों के फूलों में सुरभि के रूप में—कवित्त की अँजुरी में स्वयं समाधिस्थ हो गई हैं। पीड़ित-शोषित धरा के अधरों पर हास और उजियाले को भरने की आकांक्षा कवि की फलीभूत होती है। वह इसलिए कि, माँ की प्रार्थना करते-करते कवि की कविता—**गोर रूप गोर रंग गोर ही वसन अंग** को प्राप्त हो गयी है। डॉ. दुबे की कविता में शब्द और अर्थ के तादात्म्य से जहाँ एक संगीतात्मक अन्विति उभरती है, वहीं उनके गीतों में जन-जीवन के सुख-दुःख के आस्वाद के साथ धरती-गगन की एक पहचान भी है।

प्रो. आर्याप्रसाद त्रिपाठी
पूर्व अध्यक्ष-हिंदी विभाग
अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय
रीवाँ (म. प्र.)

निज बानी में

कवित्व बीज रूप संस्कार विशेष ही किसी कविता, गीत या काव्य धारा को जन्म देता है। यह संस्कार विशेष न तो एक-दो दिन में आ पाता है और न ही इसको सायास लाया जा सकता है। यह तो मात्र भगवदीय प्रेरणा से ही संभव है। बाल्यावस्था से ही परमपूज्य दादाजी स्व. परमसुख दुबेजी के संदर्भ में ढेर सारी रोचक कहानियाँ पिताजी के श्रीमुख से सुना करता था–दादाजी सम्पूर्ण जीवन भर गाँव के एक मन्दिर में हनुमान जी की पूजा किया करते थे। सायरी एवं गीतों की रचना करते थे तथा दूर-दूर तक जवाबी शायरी की प्रतियोगिताओं में भाग भी लिया करते थे। यही थी उनकी जीवन विधा-जिसके अंतर्गत हनुमान जी की आराधना और शायरी रचना ही प्रमुख था। दादाजी के व्यक्तित्व के इन दोनों पक्षों का संस्कार, बाल मन पर कहीं न कहीं से अप्रत्यक्षतः प्रभाव डाल रहा था लेकिन वह मुझे अज्ञात था। किंतु मैं कभी-कभी दादाजी के उस हनुमान मंदिर में पूजा-अर्जना के लिए जाया करता तथा आज भी उस मंदिर एवं हनुमान जी के प्रति मेरे मन में अनन्य निष्ठा है। संभवतः इसी निष्ठा एवं अज्ञात संस्कार विशेष ने मुझे काव्य रचना के लिए भी प्रेरित किया। परिणामस्वरूप श्रावणमास, शुक्लपक्ष, सोमवार दिनांक 05.07.1993 को अपनी बोली भाषा **'अवधी'** अर्थात् **'निज बानी'** में कविता की धार फूट पड़ी–आनंद रामायण के श्लोक–हनुमान अञ्जनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः...के छायानुवाद के साथ–

अंजना के पूत और वायु के सपूत तूँ ही।
हनुमान महाबली राम के भी प्यारे हो।
अर्जुन के मित्र और भूरे-भूरे नेत्र वाले।
अमित प्रताप वाले उदधि को पारे हो ॥1॥
सीता शोक दूर कियो, लखन को प्राण दियो।
दर्प रावण चूर कियो, बारह नाम वाले हो।
सोवत जागत पढ़े गुनत कहीं भी चले।
दूर सब भय करे, राउरे सहारे जो ॥2॥
रण में विजय करें, राजद्वारे भय हरे।

जंगल के बीहड़ में, भय-बाधा टारे हो
दुहाई हनुमान की, बड़ाई सीता राम की।
जो छन्द की रचाई में 'योगेश' को उभारे हो ॥3॥

यहीं से प्रसुप्त कवित्व बीज रूप संस्कार विशेष उद्बुद्ध होकर प्रथमतः **'हनुमान धारा'** नामक खण्डकाव्य की रचना करता है। पुनश्च, इसी हनुमद्कृपा के फलस्वरूप चित्रकूट में सेवा का सुअसवर प्राप्त हुआ। फिर क्या था? चित्रकूट आगमन के बाद तो जैसे मेरी कविता को धार तथा छन्दों को तार मिल गया और भगवान श्री सीतारामजी के पद परसी चित्रकूट की सौंधी लाल माटी से भी क्या जुड़ गया जैसे जीवन का संपूर्ण सार मिल गया–

ऊँच-नीच भुइयाँ इहवाँ, सोंधी लाल मटिया
रतिया इहीं बितइबइ ना
सोना चित्रकूट कइ मटियाँ-रतिया इहीं...॥

ऐसी ही पृष्ठभूमि एवं भावभूमि में जनमते हैं **गीतमंदाकिनी** के 24 गीत, जिसमें चित्रकूट की माटी का सौंधापन तथा यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य में रम रहे भगवान् श्री सीतारामजी के प्रति निवेदित विविध भक्ति भाव संवलित सुमधुर भावों का अवधी, भोजपुरी एवं खड़ी बोली में गुम्फन है।

लोकचेतना की अभिव्यक्ति लोकभाषा में ही संभव है। इसीलिए गाँव की माटी से जुड़े **'गीत पयस्विनी'** के 12 गीतों की अभिव्यक्ति अवधी एवं भोजपुरी में ही हो पायी। ग्रामोदय विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करते हुए इन गीतों की रचना का भरपूर सुअवसर प्राप्त हुआ। टेलीफिल्म **'अपना सुराज'** में जहाँ इन गीतों का उपयोग किया गया वहीं, संगीत विभाग के द्वारा विविध अवसरों पर न केवल प्रस्तुत किया गया अपितु इसे कैसेट में भी पिरोया गया–

चल चली आवऽ, गउँवाँ की ओरियाँ
जीवन जहाँ के रवानी में,
छोड़ शहरिया कइ धमा चौकड़ी
जीय उहाँ मनमानी में–

× × ×

अपने धुन में मगन किसनवा
गावइ गीत 'निजबानी' में–

इसी प्रकार ग्राम्यगीतांजलि के तीसरे विभाग **गीत गंगा** में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक चेतना एवं सामयिक पृष्ठभूमि में जिन 15 गीतों की रचना की गयी वे सभी अधिकांशतः खड़ी बोली में हैं। इन गीतों में जीवन संघर्षों को उजागर करने,

आज के परिवेश में जीते हुए मानव मन के उद्गारों को अभिव्यक्त करने तथा कतिपय मूल्यों को स्थापित करने की एक तड़पन है–

कविता निज की वनिता पर की
सुत आपन नीक लगै सबहीं को
कविता पर की वनिता निज की
हर पूत लगे निक काहू सुधी को।

इस गीत मंदाकिनी, गीत पयस्विनी एवं गीतगंगा के गीतों को जहाँ देश के विभिन्न कवि सम्मेलनों एवं राष्ट्रीय मंचों पर न केवल खूब सराहा गया अपितु इसने **'भोजपुरी के हस्ताक्षर'** एवं **'अवधी कवि'** के रूप में भी प्रतिष्ठित किया। किम्बहुना, इसी आधार पर अनेक साहित्यिक पुरस्कारों से सम्मानित होकर हिंदी काव्य जगत में एक लब्ध प्रतिष्ठ **'गीतकार'** की प्रतिष्ठा प्राप्त करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इस प्रकार गीतमंदाकिनी, गीतपयस्विनी एवं गीत गंगा की तीनों धाराओं को मिलाकर ग्राम्यगीतांजलि के अवधी, भोजपुरी एवं खड़ी बोली के 51 गीतों की धारा जो काव्य जगत में बहाने का भगीरथ प्रयास किया जा रहा है इसे कवि समुदाय, सराहेगा तथा साहित्य मनीषियों का आशीः प्राप्त होगा, इसी भावना एवं अपेक्षा के साथ भगवदीय प्रेरणा से रचित रचना **'ग्राम्यगीतांजलि'** को उन्हीं सर्वशक्तिमान प्रभु श्री सीतारामजी के श्रीचरणों में सादर समर्पित है।

विनयावनत
डॉ. योगेश चन्द्र दुबे 'अवधी'

विषयानुक्रमणिका

गीत मंदाकिनी

गीत पयस्विनी

गीत गंगा

गीत मंदाकिनी

माँ शारदे कहाँ तूँ

माँ शारदे, कहाँ तूँ वीणा बजा रही हो,
मेरे मन की राग को तूँ, किस धुन में गा रही हो,
माँ शारदे.............।

गौराङ्गवर्णी तूँ है, वस्त्रांग गौर तेरे
आसन-कमल-धवल से, मन को रिझा रही हो
माँ शारदे.............।

देवों ने तुझको ध्याया, मुनियों ने गुनगुनाया,
कवियों को तुम जगा के, कविता सुना रही हो,
माँ शारदे.............।

विद्या तुम्हीं से मिलती, वाणी तुम्हीं से हिलती,
कल-कण्ठ गीत गाकर, मुझको लुभा रही हो,
माँ शारदे.............।

शिशु आर्तनाद में है, माँ तेरे ध्यान में है,
कवि मार्ग पर चलाके, मुझको सता रही हो,
माँ शारदे.............।

भाषा को सार दे दे, छंदों को तार दे दे,
कविता को धार दे दे, जिस धुन में गा रही हो,
माँ शारदे.............।

माँ सब में स्नेह भर दे

माँ सबको एक स्वर दे, माँ सबमें स्नेह भर दे,
भारत की भारती को सुख-सारमय तू कर दे,
माँ सबको................।
मूल्य तुम्हारे बिखर गए सब
भूल गए सब निज सत्कर्म
भारत की माटी की थाती
था, जो मिटा सनातन धर्म
अंधकार में मग्न सभी को, ज्योतिर्मय कर दे,
माँ सबको................।
आज सभी छल-छद्म मग्न हैं
नहीं किसी का कोई सगा
माना फूल हृदय ने जिसको
वही शूल सम हमें लगा,
अंतर्मन के दिव्य कलश को, सजल-विमल कर दे,
माँ सबको................।
मानवता चीत्कार कर रही
दानवता फुफकार कर रही
पीड़ित-शोषित धरा विकल है
ऋषि-संस्कृति सीत्कार कर रही
युग के हृदतंत्री को, वीणा से झंकृत कर दे,
माँ सबको................।
सबकी सब पीड़ा पहचानें
सब में हो सबका विश्वास
हो न कहीं करुणा का क्रंदन
फैले हर अधरों पर हास
निज शारदी ज्योत्स्ना से अब, धरा-धाम भर दे,
माँ सबको................।

माँ शारदे!

जग जननि-जय-जगदम्बिके
जय माँ सरस्वती अम्बिके
जन-गण-जनम तू सँवार दे,
माँ शारदे! माँ शारदे! माँ शारदे! माँ शारदे!

आसन-धवल कमलासिनी
भूषण-वसन शुभ्रासिनी
हंसासिनी! विमल विचार दे,
माँ शारदे! माँ शारदे! माँ शारदे! माँ शारदे!

पद-वाक्य-वर्ण-विन्यासिनी
भावार्थ-गौरव-भासिनी
विमलासिनी! वाणी निखार दे,
माँ शारदे! माँ शारदे! माँ शारदे! माँ शारदे!

कर-कमल पुस्तक धारिणी
विद्या-विभव-विस्तारिणी
भवतारिणी! विद्या अपार दे
माँ शारदे! माँ शारदे! माँ शारदे! माँ शारदे!

सुर-ताल-लय-संगीतमय
मन-मंजु हो निर्मल अभय
वीणा से वह झंकार दे
माँ शारदे! माँ शारदे! माँ शारदे! माँ शारदे!

मन कलुष तन-तामिष शमन
निष्पाप हो चिन्तन मनन
'योगेश'-दोष निसार दे
माँ शारदे............।

माई से अरज

गोर-गोर कमल अउ गोर-गोर चन्द्रमा स,
गोर-गोर रुपवइ तोहार मोरि माई बा।
गोर रूप गोर रंग गोर ही वसन अंग,
गोर ओस बूनी स तउ हार मोरि माई बा ॥1॥

गोरे-गोरे कमल के आसन विराजू तूँहीं,
हाथे में सितार-तार तोरे मोरी माई बा।
बरम्हा-महेश-विष्नु आदि सब देव सदा,
माथ तोरे चरन में नाए मोरी माई बा ॥2॥

कमल क आसन छोड़ि, हंस पे सवार दौड़ि,
देखि लेतू दीन-हीन दशा मोरि माई बा।
काटि देतू कष्ट नष्ट पाप सब कइ देतू,
सुनि लेतू अरज उधार मोरि माई बा ॥3॥

व्यास-बाल्मीकि, कालिदास तूँ बनइलू माई,
सूर, तुलसी, कबीर, जायसी जगइलू हो।
मोरे मन कविता क भाव तूँ उठइलू माई,
अगम, अनन्त पंथ तोहँई धरइलू हो ॥4॥

भाव नाहीं मोरे बाटइ भाषा कमजोरइ बाटइ,
छन्द का विधान अउ सधान नाहीं माई रे।
धार कविताई क महान् जवनई फूटि चली,
कर गहि माई तूँ ही पार दे लगाई रे ॥5॥

जब भाव क धार बहाइ दिहू,
तब धार क पार लगाव तूँ माई।
मझधार में तूँ पतवार धर,
अब धार किनारे लगाव तूँ माई ॥6॥

जय हनुमान हरे

अन्जनासुत, बजरंगी, रणरंगी हे,
करहु सदा कल्यान, जय हनुमान हरे ॥1॥

मारुतसुत, शिवनन्दन, जगवन्दन हे,
अरुण वदन अभिराम, जय हनुमान हरे ॥2॥

जनकसुता दुःख भंजक, प्रभुरंजक हे,
संकटमोचन नाम, जय हनुमान हरे ॥3॥

लक्ष्मण शूलनिवारक, भवतारक हे,
सतत भजत श्रीराम, जय हनुमान हरे ॥4॥

बाल समय रवि भक्षक, जनरक्षक हे,
करहु अभय अविराम, जय हनुमान हरे ॥5॥

दशमुख दरप विदारक, भयवारक हे,
जपत सदा हरि नाम, जय हनुमान हरे ॥6॥

पारथ के रथ पालक, खल घालक हे,
प्रकटित चरित ललाम, जय हनुमान हरे ॥7॥

रामचरित गुन गायक, कपि नायक हे,
बलबुधि-ज्ञान-निधान, जय हनुमान हरे ॥8॥

कवि **'योगेश'** पुकारत, अति आरत हे,
बसहु सदा उर धाम, जय हनुमान हरे ॥9॥

बाबा पवन कुमार

शंकर सुवन, हे केशरी नन्दन, बाबा पवन कुमार
सरनिया तोहरे आए-2
सुनि लेत, विनती हमार-सरनिया तोहरे आए-2
तोहरे आए, तोहरे आए, तोहरे आए द्वार,
सरनिया तोहरे आए-सुनि लेत, विनती हमार...।
राजपाठ प्रिय-प्रिया हीन सुग्रीव से राम मिलाय,
बाली पापी के चंगुल से रुमा प्रिया छोड़वाय,
तीनहु लोक में तोहरे जइसन, नाहीं केहु उदार,
सरनिया तोहरे आए-कइ देत, किरपा अपार,
सरनिया तोहरे..............॥1॥

सीताहरण से व्याकुल राम के मन धीरज बन्हवाय,
सौ योजन समुद्र तूँ लाँघ, सीता पता लगाय
लंका जारि के दुष्टन क तूँ, कीह्य बहुत संहार
सरनिया तोहरे आए-तूँ ही मोरे, जीवन अधार
सरनिया तोहरे..............॥2॥

लखन लाल के शक्ती लागी तुरतइ बैद बोलाय,
भोर से पहिले बूटी लाइके ओनकर जान बचाय,
रामादल में होइ लगा हे, तोहरइ जय-जयकार
सरनिया तोहरे आए-बनइ देत, बिगड़ी हमार,
सरनिया तोहरे..............॥3॥

पारथ के रथ पे चढ़ि के तूँ पाण्डव के जितवाय
राम सिया के काज में आपन जिनगी पूरी लगाय
सबके कष्ट मिटावइ खातिर, भा तोहरइ अवतार
सरनिया तोहरे आए-बनइ देत जिनगी हमार,
सरनिया तोहरे..............॥4॥

बल-बुद्धी औ ज्ञान बदे सब तोहरइ सरन में आवँइँ,
श्रीचरनन में ध्यान लगाइके भक्त सबहि कुछ पाँवइ,
पूजा-अर्जन किछु ना मोरे, छमा किहऽ करतार
सरनिया तोहरे आए, तबउ चाही, तोहरइ दुलार
सरनिया तोहरे..............॥॥

नइया के खेवैया

हनुमान बाटइ मोर मॅजधारे नैया,
पार लगइद मोरी नैया के खेवैया
बड़-बड़ काम कइल राम क तूँ भइया,
छोट एक काम मोरइ, तोहँइ करैया,
हनुमान!............................।

लखन के तूँ प्रान दिहलऽ, प्रान के देवैया,
जिनगी हमार तोहरे हॉथे तूँ सहैया,
हनुमान!............................।

सीय शोक दूर कइलऽ, शोक के हरैया,
दुःख मोर दूर कइदऽ, लंका के नशैया,
हनुमान!............................।

विनती हमार सुनिलऽ, अञ्जना के भैया,
नाहीं त गोहारि करबइ मइया क हे भइया,
हनुमान!............................।

सुनि के गोहारि मैया, भेजिहीं बोलवैया,
डाटि जब अदेश करिहीं, होबऽ तब सहैया
हनुमान!............................।

कहल-सुनल भूलि सब, राख्य मोहें छैंया,
तोहेंइ छोड़ि हनुमत केकर पकड़ी हे बहियॉ
हनुमान!............................।

यह चित्रकूट वन नन्दन है

इस चित्रकूट के आँगन में,
कामद गिरि के इस प्रांगण में,
हे मनसा वाचा कर्म पूत।
तेरा सारस्वत वन्दन है,
इस परिसर में अभिनन्दन है ॥

यह माटी राम-लखन-सिय की,
हुलसी सुत तुलसी के हिय की,
इसको सिर धर हे धर्म पूत।
ये माटी नहीं ये चन्दन है,
इस परिसर में ....॥

नारद, नल, पाण्डव भी आए,
ऋषियों-मुनियों ने गुन गाए,
तूँ भी गाना महिमा अकूत।
ये माटी नहीं ये कुन्दन है,
इस परिसर में ....॥

इस धरती पर जो भी आया,
प्रभु का किञ्चित् है गुन गाया,
तुम बड़भागी बन हे सपूत।
यह चित्रकूट वन नन्दन है,
इस परिसर में ....॥

सिय-राम-लखन का पुण्य धाम,
यहाँ शुभा गमन करे पूर्ण काम,
मंगलमय पथ करें पवनपूत।
'योगेश' हृदय निष्यन्दन है,
इस परिसर में ....॥

बताव हे बबुआ

बतावऽ हे बबुआ! कहँताँ तूँ जइबइ-2
बताव हे बबुआ........................।
रहिया में तोरे बहु घमवाँ लगल बाय,
चेहरा तोहार जइसे झाँवर भयल बाय,
गोड़वा पसीना तोरे, मड़वा चढ़ल बाय,
देहियाँ तोहरा सारी करिया भयल बाय,
बतावऽ हे बबुआ! कहँवाँ छँहइबऽ।
बताव हे बबुआ........................।

मथवा पसीना होंठे फॉफी परल बाय,
देहियाँ तोहार सगरी लथपथ भयल बाय,
पानी बिना नटई काँटा भयल बाय,
हलिया तोहार नाहीं देखल-सुनल जाय,
बतावऽ हे बबुआ! कहँवाँ जुड़इबऽ।
बताव हे बबुआ........................।

तिरिया बेचारी के नहकइ जरउल,
सथवाँ में भाई सुकुवार तूँ लियउल,
देहिंया से अपने न नेहियाँ लगउल,
तिरिया अउ भाई के काहें सतउल,
बतावऽ हे बबुआ! कहाँ सुहँतइबऽ।
बताव हे बबुआ........................।

बनवाँ यहिं छाँह चहुओरियाँ दिखत बाय,
मंदाकिनी धारा इहवँइ बहत बाय,
पीय तूँ पानी यहिं झरना झरत बाय,
इहवँइ जुड़ा मोर मनवाँ कहत बाय,

बतावऽ हे बबुआ! अब कहाँ जइबऽ
बतावऽ हे बबुआ......................।

ऋषि-मुनि, ज्ञानी सब इहवँइ रमऽलें,
वाल्मीकि, अत्रि, अनसुइया रहऽलें,
लगियँइ इहीं गिरिराजउ बसऽलें,
इहँवँइ बसऽ **'योगेश'** मनवाँ कहऽलें,
बतावउ हे बबुआ! अब नाहीं जइबऽ।
बतावउ हे बबुआ! इहँवइ न रहबऽ।
बताव हे बबुआ......................।

चित्रकूट बनवा में

डीह बाबा हउअ रउआँ-2
चित्रकूट वनवाँ में भोले बाटइ तोरइ, नउवाँ
डीह बाबा.................।

भइया-भौजी संग में इहँवाँ,
रुकल बाने एहीं बनवाँ
रउरा अदेश बिना
रुकी कवने ठउवाँ......रउवाँ
डीह बाबा.................।

राज-रजधानी छोड़ले
छोड़ि दिहले आपन गउवाँ
चित्रकूट अइले हमनी
बोलऽ ठहरी कवने छउवाँ
डीह बाबा.................।

सुनिके बचनिया भोले
मन मुस्काइ डोले
एक हाथे जिभिया धइले
दूजे कछबन्हउवाँ.......रउवाँ
डीह बाबा.................।

घरी दुई घरी होइ गइलें
कछु नाहीं कहलें सुनलें
मनवाँ मगन होइ नाचँइ
अइले राम मोरे गउवाँ
डीह बाबा.................।

कोपिया लखन कइ बाढ़ी
पहुँचे जाइ बनवाँ ठाढ़ी

रामजी से कहिलें सगरइ
भइया! भोले दिहले बउवाँ
डीह बाबा.................।

सुनले कहनिया भइया
बूझँइ और बुझावँइ रइया
बनिया-जवनिया थाम्हिके
रहनि कइलऽ एहीं ठउवाँ
डीह बाबा.................।

नाहीं बोले भोले तबहूँ
कहि दिहले कुलियइ दउआँ
डीह बाबा.................।

सोना चित्रकूट कई मटिया

ऊँच-नीच भुइयाँ इहँवाँ,
सोंधी लाल मटिया,
रतिया इहीं बितउबइ ना।
लागइ सरग कइ सुन्दर थतिया
रतिया..................।

हरियर छाँह इहाँ पेड़वन कइ
लता-फूल चहुँ छाजे,
कंद-मूल यहिं बा बनवाँ में
फरवा डरिया साजे, रतिया...
लागइ नन्दन बन ई बगिया
रतिया..................।

झर-झर झरना बहइ इहॉ नित
मंदाकिनी किनारे
बहइ बयार इहॉ पुरवइया
दिनवॉ-सॉझ-सकारे...रतिया...
बनउब चित्रकूट गिरि टटिया...रतिया...
रतिया..................।

भोरवॅइ उठि गंगा में नहइबइ
सुरुज के देबइ पानी
गंगाजल भोले के चढइबइ
झुमिहीं अवढर दानी, रतिया...
बइठब फटिकशिला संग सथिया,
रतिया..................।

शेर-सियार-हरिन अहिगन यहिं
बिचरॅइ सब मनमानी

केहू के नाहीं डर बा केहु से
पीयँई घाट इक पानी, रतिया...
इहँवाँ लोगए जनम क सथिया,
रतिया..................।

गिरि-कंदरा घाट-नद-नाला
इहाँ क इहइ निशानी
ऋषि-मुनी सब इहँवइ बाटें
हमहूँ रहब सिय-रानी, रतिया...
सोना चित्रकूट कइ मटिया
रतिया..................।

है भारत का हृदय चित्रकूट

है भारत का हृदय चित्रकूट इसकी शान हो तुम
तुम्हीं गिरिराज कामदनाथ कूट महान् हो तुम।
तुम्हीं..................... ।

तेरी छाया में कितने ऋषि-मुनी जीवन बिताए
किये जप-तप तेरी माया से सब परलोक पाए
तेरी महिमा अमित गिरिवर हे! मुक्तिधाम हो तुम
तुम्हीं..................... ।

विपद् की मार सह के जो जगत से भाग आया
उसे देकर शरण प्रभु आपने गोदी बिठाया
तू गिरिवर ही नहीं, अशरण-शरण भगवान हो तुम
तुम्हीं..................... ।

हुए पथभ्रष्ट धर्मच्युत जो राजा ऋषि प्रजाजन
किया दर्शन जो तेरा हो गए निष्पाप तन-मन
बनाया धर्म की मूरत, कि धर्म के धाम हो तुम
तुम्हीं..................... ।

जिसे वैभव की चाहत थी उसे वैभव दिलाया
जिसे सुत-वित्त की चाहत उसे पूरा कराया
किया पुरुषार्थ सबका पूर्ण, पूरनकाम हो तुम।
तुम्हीं..................... ।

तेरे शृंगों की शोभा पर है कवि का मन लुभाया
कहा गजराज से हैं रामगिरि तुमको बताया
किया कवियों को है पैदा कि तुलसीग्राम हो तुम
तुम्हीं..................... ।

तेरी छाया में बसने को महर्षी ने सुझाया
तभी प्रभु राम ने 12 बरस सुख से बिताया
जहाँ प्रभु राम बसते थे वही सुखधाम हो तुम
तुम्हीं..................।

तूँ गिरियों में बने गिरिराज तीर्थों में तूँ तीरथराज
परम कल्याण कारक तूँ तेरा मंगलमयी सम्राज
तेरे दर्शन से हो मंगल, कि मंगलधाम हो तुम
तुम्हीं..................।

तूँ पीठों में प्रथम हो पीठ पर्वतराज हे अविचल
लुटाते धर्म अर्थ सकाम मुक्ती मुक्तकर निश्छल
मिले वांछित तेरे दर्शन से, कामदधाम हो तुम
तुम्हीं..................।

किया जिसने तेरा दर्शन, मनन, चिंतन औ पूजा
मिला सब कुछ, मिटा आवागमन, ना जन्म दूजा
अमित दातार तूँ गिरिवर, कि सीताराम हो तुम
तुम्हीं..................।

तेरे दरबार में जाकर है जिसने सिर नवाया
किया लेटी परिक्रमा आर्त हो तुझको बुलाया
हुए अवढर तुरत गिरिवर, परार्थ प्रकाम हो तुम
तुम्हीं..................।

किया जिसने नहीं जीवन में कोई तीर्थ का सेवन
दिया उसको सकल है पुण्य गिरिवर इक तेरा दर्शन
तूँ गिरिवर ही नहीं, संपूर्ण तीर्थ निधान हो तुम
तुम्हीं..................।

नहीं ब्रह्माण्ड में है पीठ, पर्वत तीर्थ तुम सम
तेरे अंतर्हृदय में बस गये सियराम गृह सम
जहाँ सियराम बसते थे, वही प्रभुधाम हो तुम
तुम्हीं..................।

बसाया राम सिय को गर्भ में सप्तावरण मंडित

बनाया दिव्य अणिमादिक सुशोभित रत्नमय मंदिर
जहाँ सियराम बसते थे, वो पावन धाम हो तुम
तुम्हीं..................... ।

है पर्वत मध्य सन्तानक सुकानन फूल फलछादित
रचा उस बीच ब्रह्मा ने सरोवर दिव्य मणिराजित
वहीं सियराम राजित हैं सदा, वो धाम हो तुम
तुम्हीं..................... ।

जय मइया मंदाकिनि

जय मइया मंदाकिनि जय-जय
जय कामद गिरिराज महान्
चित्रकूट अति पुरी सुहावन
बसे लखन-सिय संग भगवान
जय मइया मंदाकिनी......॥

सूर्य तीर्थ है, चन्द्र तीर्थ है,
अग्नि-वरुण हैं तीर्थ निधान
सोम तीर्थ संकर्षण भी है,
मणिकर्णिका यहीं पे जान
तीर्थ राज यह पुरी है भैया,
तीर्थ करोड़ों यहाँ महान्,
देवांगना तीर्थ हैं इहँवाँ
कोटि तीर्थ है यहीं का नाम
जय मइया मंदाकिनी......॥

सूर्य कुण्ड है ब्रहम कुण्ड है
कुण्ड जानकी है श्रीमान,
विघ्न विनाशक कुण्ड यहाँ है
मगरा कुण्ड यहाँ की शान
देवों औ ऋषियों ने पहले
किए बहुत हैं यज्ञ विधान,
यज्ञ कुण्ड हैं पग-पग में
यहाँ धारकुण्ड है देवस्थान।
जय मइया मंदाकिनी......॥

मणिमय मुक्तामयी शिलाएँ
स्वर्ण, रजत सी कांति वितान,

पापमोचनी दारिद्रनाशिनि
ऋणमोचनी शिला अन्जान।
शिला बहुत है चित्रकूट में
फटिकशिला है इसकी शान
रत्नजटित जिस शिलाखण्ड पर
सिय संग बैठे थे भगवान।
जय मइया मंदाकिनी......॥

ऋषियों की यह तपोभूमि है,
तप बल का हम करें बखान,
लोमश, गौतम, वामदेव,
दालभ्य, सुतीक्ष्ण अगस्त्य हैं शान।
शरभंगा आश्रम है जहॅवॉ
अत्रि ऋषी जहँ हुए महान्
मुनिवर नारद यहीं पे आके
पाए निज पापों से त्रान।
जय मइया मंदाकिनी......॥

तुंगारण्य, देव, श्रीपर्वत
कालिंजर मणिकूट वितान,
वेदारण्य, वेंकटा, मण्डप,
पर्वत द्रोण यहाँ की शान।
पर्वत अचल अडिग है जहँवाँ
तहँ कामदगिरि हैं भगवान
करे प्रदक्षिणा जो भी निशि दिन
पूरे सकल कामना जान।
जय मइया मंदाकिनी......॥

सरस्वती-वैतरणी-गंगा
दुग्धवाहिनी नदी निशान
मंदाकिनी यहाँ हैं बहती
कल-कल, छल-छल है पहचान।
यहाँ नहाओ निसि-दिन सब मिल
पाओ निज पापों से त्रान

माँ के चरणों में गिर-गिर के
गाओ! जय-जय-जय-श्रीराम
गाओ! जय-जय-जय-श्रीराम
जय मइया मंदाकिनी......॥

कहाँ चलि गइले सीता-राम

छोड़ि गइले हमनी के राम
जियरा बाउर भइले.......। टेक।
हम वनवासी नाहीं कइले कवनिउ सेउवा
जियरा बाउर भइले,
कहां चलि गइले सीताराम,
जियरा बाउर भइले............॥

खाली-खाली कुटिया में चीर ना लकुटिया
खर-कतवार भरल, खुलल बाने टटिया
नाहीं सियारानी कइ निशान
जियरा बाउर भइले............॥

बहरे न राम दीखें, नाहीं संत भिरिया
फर-फूल केका देई, केसे कही पिरिया
दीखें न लखन लिहले बान,
जियरा बाउर भइले............॥

बेरिया न खाँइ बानर, खाँइ नाहीं चनवा
आजु न कुलाँच भरत बाने ई हिरनवाँ
अँसुवा ढरत बैठल स्वान,
जियरा बाउर भइले............॥

डरिया पे मनमारे बैठल बा सुगनवा
पिहँकइ न पपिहा, मोरवा नाचइ न बनवाँ
तजलेसि कोइलिया इहँवाँ प्रान,
जियरा बाउर भइले............॥

भोरवँइ कुम्हिलाइ गइल लता मौलसिरिया
झुलसल लागइ फर-फूल-पात-डरिया,

बनवाँ लगेला ई मशान,
जियरा बाउर भइले............॥

फटिकशिला पे खोजले खोजे अनुसइया,
वन-वन खोजे, सिया-राम-लखन-भइया,
खोजतइ बितल आठों याम,
नाहीं मिले कहूँ सीताराम,
जियरा बाउर भइले............॥

सुख अउ सनेह भरल रहय दूनउ भइया
जहाँ रहय उहीं संघे रहँइ सीता मइया
चित्रकूट बहुरय पुनि राम,
जियरा बाउर भइले............॥

हमनी क दीहय कबहूँ ध्यान
जियरा बाउर भइले..........।
किरपा कीहय किरपा निधान
जियरा बाउर भइले............॥

कवने बनवॉ में

कवने बनवॉ में होइहीं हमार ललना-2
कहूँ छहँवा में होइहीं कि होइहीं घमवॉ
कवने बनवॉ में........................॥

फूलन के सेज पे बेनिया डोलाए
घाम-शीत-बरखा से ओनका बचाए
कइसे बन कइ विपतिया सहे कोमल तनवॉ
कवने बनवॉ में........................॥

दियरी क बाती नाहीं कबहुँ उसुकाइन
चेरिउ बोलावत की तनी मुसुकाइन
कहूँ मटिया में होइहीं मोर सिया सोनवॉ
कवने बनवॉ में........................॥

राम-सिया लरिका हयें लखन मोर बाउर
नाहीं उहाँ घर-बार नाहीं ननियाउर
उहाँ बनवॉ में पूँछे के पानी-दनवॉ
कवने बनवॉ में........................॥

आइ चउमासा छाई घटा अन्हियरिया
तड़के बदरवा अउ चमके बिजुरिया
कहूँ डरपत होइहीं हमार हिरना
कवने बनवॉ में........................॥

सावनी बयार अउर बरखा की बुनिया
तीज-त्यौहार अउर कजरी की जुनिया
कइसे बनवॉ में झूलिहीं मोर सिया झुलना
कवने बनवॉ में........................॥

आजा-आजा राघव

आजा-आजा राघव मेरे, झूला हम झुलायेंगे-2
सरयू किनारे झूला पेड़ पर डलायेंगे
वहीं हम नहायेंगे सब, मिल के गीत गायेंगे
आजा-आजा राघव.........................॥

तुझको झुलायेंगे, भइया भरत को बुलायेंगे
संग दूनो भइया को, मिल के झुलायेंगे
आजा-आजा राघव.........................॥

तुझको झुलायेंगे, भइया लखन को बुलायेंगे
संग दूनो भइया को, मिल के झुलायेंगे
आजा-आजा राघव.........................॥

तुझको झुलायेंगे, भइया शत्रुघ्न को बुलायेंगे
संग दूनो भइया को, मिल के झुलायेंगे
आजा-आजा राघव.........................॥

चारों भइया झूलेंगे, हम सखा सब झुलायेंगे
सभी मिल संग-संग, कजरी सुनायेंगे
आजा-आजा राघव.........................॥

नहीं आये, राघव तो हम सभी रूठ जायेंगे
चाहे **'योगेश'** हमें कितना मनायेंगे
आजा-आजा राघव.........................॥

झूला झूलें राम

झूला झूलें राम, दशरथ बखरिया में
अवध की नगरिया में ना ॥
झूला दशरथ झुलावें, कजरी कौशल्याजी गावें
राम झूलें झूला भरत भरि अँकरिया में
अवध की नगरिया में ना..............॥

झूला दशरथ झुलावें, कजरी कैकेयीजी गावें
राम झूलें झूला लखन भरि अँकरिया में
अवध की नगरिया में ना..............॥

झूला दशरथ झुलावें कजरी सुमित्राजी गावें
राम झूलें झूला शत्रुघ्न भरि अँकरिया में
अवध की नगरिया में ना..............॥

चारों ललना झूला झूलें देखि राजा मन में फूलें
रानी चूमें लाल भरि-भरि अँकरिया में
अवध की नगरिया में ना..............॥

शोभा झूला की निराली निरखें अवध नर-नारी
मन **'योगेश'** मस्त गॉवेंइ ई कजरिया में
अवध की नगरिया में ना..............॥

आज रघुवर क जनम दिन मनइबइ

आज रघुवर का जनम दिन मनइबइ
मन के बगिया क फुलवा चढ़इबइ,
आज रघुवर...........................॥

तोरण-पताका कनक भवन में सजइबइ
दशरथ दरबार में फुलवा बिछइबइ
अँतर-गंध अउ गुलाल हम उड़इबइ
आज रघुवर...........................॥

स्वास्तिक शुभ मंगल क चिन्ह हम बनइबइ
चौक पूरि छत्र-चामर आसन लगइबइ
उपरॉ रघुवर के प्रेम से बिठइबइ
आज रघुवर...........................॥

दूब, अक्षत-रोली क थार हम सजइबइ,
धूप-दीप-नैवेद्य आरती रचइबइ,
सोलहों विधि से पूजा करइबइ
आज रघुवर...........................॥

बड़े-बड़े फूलन के माला पहिरइबइ,
चरनन में शीश नाइ फूल सब चढ़इबइ,
संग **'योगेश'** के बधाई गीत गइबइ,
आज रघुवर...........................॥

अवध नर-नारिन के ई शोभा निरखइबइ
सरगे से देउतन के आजु हम बोलइबइ
उपरॉ देउतन से फूल बरसवइबइ
आज रघुवर...........................॥

बाबा तुलसी

धनि चित्रकूट, धनि-धनि माई हुलसी।
कोखिया में जेकरे जनमले 'बाबा तुलसी' ॥

बरम्हाजी रचना कइले, यज्ञ इहँवॉ कइके
पहरा में भोले ठाढ़े दिन रात रहिके
बिसनू संग लछिमी इहँवॉ बने-बने बिलसी
कोखिया में जेकरे............................॥

राजा नल, पाण्डव, नारद ऋषि अइलें,
दुःख, पाप दूर कइके जनम बनउलें,
मटिया इहॉ क भइया देउतन कइ परसी,
कोखिया में जेकरे............................॥

अत्रि अनुसुइया तीनिउ देउता इहीं जनिलें,
वाल्मीकि पहिले रामकथा इहीं कहिलें,
राम कइ किहिनियॉ इहीं धरती से सरसी,
कोखिया में जेकरे............................॥

राम कइ करनियॉ, किहिनियॉ कइ थाती
राम-लखन-सीता, वाल्मीकि जी कइ माटी
इहीं बदे इहँवॉ तुलसी-माई भइलीं हुलसी,
कोखिया में जेकरे............................॥

भुइयॉ जनमवा क होला सभे प्यारी,
सरगे से बढ़िके होला, आपन महतारी,
इहीं ऋणवा खातिर 'मानस' रचना गइल बरसी,
कोखिया में जेकरे............................॥

हे चित्रकूट के संत

हे चित्रकूट के संत तुम्हारी जय-जय हो ॥टेक॥
जय कविकुलगुरु श्रीमंत तुम्हारी जय-जय हो ॥
हे चित्रकूट के संत.........................॥

तुम सकल शास्त्र श्रुति-सागर
तुम काव्य-कला गुन आगर
हे अमरगुरु जीवन्त तुम्हारी जय-जय हो ॥
हे चित्रकूट के संत.........................॥1॥

हिय सीय सहित रघुनायक
नित रामचरित गुन गायक
हे मूर्तिमन्त मतिमंत तुम्हारी जय-जय हो ॥
हे चित्रकूट के संत.........................॥2॥

दुखियों का दुःख मिटाया
दीनों का दैन्य हटाया
दिया भक्तों को भगवंत, तुम्हारी जय-जय हो ॥
हे चित्रकूट के संत.........................॥3॥

जन-गण-मन अंतर्यामी
बाबा बन गये गोस्वामी
हुलसी-सुत रत्नाकन्त, तुम्हारी जय-जय हो ॥
हे चित्रकूट के संत.........................॥4॥

थी भक्ती कविता साधन
किया राम राष्ट्र आराधन
हे मानस मुक्ता हंस, तुम्हारी जय-जय हो ॥
हे चित्रकूट के संत.........................॥5॥

जग को तुम राह दिखाए
भवसिंधु पार करवाए
'योगेश' पथिक के पंथ तुम्हारी जय-जय हो ॥
हे चित्रकूट के संत.........................॥6॥

रामायण की प्रासंगिकता

रामायण की प्रासंगिकता, किसको आज सुनाए कौन,
फिल्मचरित में मगन सभी हैं, रामचरित को गाए कौन ॥
मेरा बेटा राम बने यह हर पापा हैं चाह रहे
पहले दशरथ खुद बन जाओ, इसको आज बताए कौन
रामायण..॥

बहू हमारी सीता जैसी आए मम्मी चाह रहीं,
कौसल्या का चरित कहाँ से, इनको आज सिखाए कौन,
रामायण..॥

भाई लखन भरत जैसा हो बाली रावण चाह रहे
रामायण का भाव न जानें, रामचरित अपनाए कौन,
रामायण..॥

रत्नाकर बाल्मीकि बने तो रावण भी हो सकते राम
रामचरित पर अमल करें, तो कलिमल हो जाएगा बौन,
रामायण..॥

भरत-लखन हर गली में होंगे सीय राममय जग होगा
रामायण घर में होगा, तब कलयुग हो जाएगा मौन,
रामायण..॥

देवी गीत

ऊँचइ रे पहड़वा पे, बसले तँइ माई रे!
हम कइसे चढ़ी ना, हाँ हम कइसे चढ़ी ना,
तोर ऊँचइ रे असनवाँ, हम कइसे चढ़ी ना,
करबै तोरइ दरसनवाँ, हम कइसे करी ना।
करबै तोरइ...................................॥

अष्ट भुजा वाली माई, विंध्याचल बसलिउ
पहाड़ चढ़ि ना, हाँ पहाड़ चढ़ि न,
माई वैष्णो देवी भइलू, पहाड़ चढ़ि ना,
तोर इहइ दरसनवाँ, हम कइसे करी ना।
करबै तोरइ...................................॥

शारदा भवानी मैया, मैहर में तूँ रमलिउ
पहाड़ चढ़ि ना, हाँ पहाड़ चढ़ि ना,
माई मैहर देवी भइलू, पहाड़ चढ़ि ना,
तोर इहइ दरसनवाँ, हम कइसे करी ना।
करबै तोरइ...................................॥

गोड़वा पिराइ माई, देहँ थरथराइ
हाँ रे कइसे चढ़ी ना, हाँ रे कइसे चढ़ी ना,
तोर ऊँचइ रे मचनवाँ, हम कइसे चढ़ी ना,
बेहबल बाटई मोर तनवाँ, हम कइसे चढ़ी ना।
करबै तोरइ...................................॥

बनिया झुरायल माई, मन अकुलाइ
हाँ रे कइसे करी न, हाँ रे कइसे करी ना,
तोरे रूप कइ बखनवाँ, हम कइसे करी ना।
बेहबल बाटइ मोर मनवाँ, हम कइसे करी ना,
करबै तोरइ...................................॥

अँखिया पियासलि माई, बहइ तबउ धार
हाँ रे कइसे करी ना, हाँ रे कइसे करी ना,
तोरइ दिव्य रूप पनवाँ, हम कइसे करी ना,
प्यासल बाटइ मोर नयनवाँ, हम कइसे करी ना।
करबै तोरइ...................................॥

हँथवा लगाइ माई, गोदी ले उठाइ
दुलराइ देते ना, दुलराइ देते ना
रोवत बाटइ तोर ललनवा, चुपाइ देते ना
धरतइ तोरइ श्रीचरनवा बोलाइ लेते ना
करतइ तोरइ दरसनवाँ, बोलाइ लेते ना।
करबै तोरइ...................................॥

राम का सहारा

राम का सहारा जब से जग में मैंने पाया है
राम जी पे जीवन वारा, राम गुन गाया है
राम जी हैं मेरे स्वामी.......2
राम ही की माया है
राम का सहारा.............................॥

नाम-रूप-लीला-धाम मन में समाया है
मोहनी मूरत प्रभु की नैनों में बसाया है
राम जी का दर्शन मिले........2
ध्यान नित लगाया है
राम का सहारा.............................॥

राम की कृपा का ही मेरे जीवन पे साया है
उनकी कृपा से मेरी श्वास और काया है
राम जी हैं मेरे सब कुछ.........2
राम जी की छाया है
राम का सहारा.............................॥

चरणों की धूल मैंने माथे पे लगाया है
उनकी कृपा से सुत-वित-नारि-यश पाया है
राम जी हैं इनके रक्षक 2
राम ने बनाया है
राम का सहारा.............................॥

नमो राघवाय

नमो राघवाय नमो राघवाय
नमो राघवाय नमो राघवाय
नमो राघवाय....................॥1॥

कौशल्या के बारे हे दशरथ दुलारे
जनकसुताजी के प्राणों से प्यारे
तेरा अवतरण प्रभु जगद हिताय
नमो राघवाय....................॥2॥

अहल्या को तारे और शबरी उबारे
तेरी कृपा गीध स्वर्ग सिधारे
तेरा अवरतरण प्रभु, विकल रञ्जनाय
नमो राघवाय....................॥3॥

बाली संहारे सुग्रीव सँवारे
रावण को मारे विभीषण दुलारे
तेरा अवतरण प्रभु, स्वजन सुखाय
नमो राघवाय....................॥4॥

तेरे भक्त हैं, प्रभुवर तेरे ही सहारे।
संकट में उनके नंगे पाँव तूँ पधारे।
मन क्रम वचन तेरा भक्तजन हिताय,
नमो राघवाय....................॥5॥

गीत पयस्विनी

ग्रामोदय संकल्प

गांधी-ग्रामोदय-गंगा से बही ज्ञान की धारा है,
गाँवों का उत्थान करेंगे, यह संकल्प हमारा है।
गाँवों का उत्थान...................................॥

बापूजी ने ग्राम्यजनों को, था नूतन विश्वास दिया
दीन-हीन दुखियों की खातिर, उनने सदा प्रयास किया
उनकी ही कारण सत्ता का, हमको सतत् सहारा है
गाँवों का उत्थान...................................॥

गाँव-गाँव के हर कोने में, गली-गली में जाएँगे
तपी हवाओं से मुरझायी, कली-कली विकसाएँगे
गीता, गुरुकुल की शिक्षा से बही यहाँ रसधारा है
गाँवों का उत्थान...................................॥

नव विकास का सूर्य उगेगा, तिमिर नहीं रह पाएगा
गाँवों में बिजली पानी हो, स्वर्ग धरा पर आएगा
अंधकार कितना ही हो पर, सूरज कभी न हारा है,
गाँवों का उत्थान...................................॥

अपने उस गाँव में

आओ फिर लौट चलें अपने उस गाँव में
शीतल दोपहरी जहाँ वासन्ती छाँव में।
आओ फिर लौट चलें....................॥

बगिया में अमराई रह-रह के महके
महुआ के मधु घट से रसवंती टपके
मलयानिल महक उठे मदमाते ठाँव में,
शीतल दोपहरी............................॥

फूल गयी मटरफली पीतवरन सरसों
झूल रहे जौ-गेहूँ देख-देख हरसो
श्रम का तप जाग रहा जीवन की दाँव में,
शीतल दोपहरी............................॥

खेतों-खलिहानों में रिधि-सिधि है बिखर रही
मधुमासी यौवन चौपालों में निखर रही
जीवन है विहँस रहा नदिया में नाव में,
शीतल दोपहरी............................॥

पनघट पे घट-घट से भोर मची हलचल
गगरी संग रसरी से गोरी भई विह्वल
थिरकन सी मचल उठी मधुर पाँव-पाँव में,
शीतल दोपहरी............................॥

कोयल की कूक, शुक, मयूर वैन वन में
वंशी की धुन सुन के हूक उठे मन में
ऊबा मन भीड़ भरी विरस काँव-काँव में,
शीतल दोपहरी जहाँ वसंती छाँव में ॥
आओ फिर लौट चलें अपने उस गाँव में ॥

गाँव का अपनापन

लौटा दो-लौटा दो मेरे गाँव का अपनापन।
कहाँ गयी वो थाती माटी, कहाँ वो भोलापन।
लौटा दो....................॥

सूखे पोखर, ताल-तलैया
दुबला ढेकुली चले न भैया
सूखे कूप रहट हुए गायब
चरसे का न चलन
लौटा दो....................॥1॥

हल-जुआ खूँटी पर टँग गये
बैल सभी अब साँड़ बन गये
छुट्टा खेत चरें दिन-राती
नहीं कोई बंधन
लौटा दो....................॥2॥

गइया, गोरु ना गोरुवारा
गोबरखाद, घास ना चारा
कंडे पर सेंकी रोटी में
लगा हुआ मक्खन
लौटा दो....................॥3॥

दूध, दही, घी, छाँछ करोनी
घुघुनी, रस आलू की सलोनी
कोलहाड़े में पकते गुड़ की
महक का सोंधापन
लौटा दो....................॥4॥

पंडित के छप्पर में कौड़ा
रोज लगे, हो दौड़ी-दौड़ा

गाँव-गिराँव के हाल-चाल सब
होता था प्रवचन
लौटा दो......................॥5॥

आज नहीं कोई कौड़ा तापे
अंतर्दाह सभी को ब्यापे
डाँड़ा-मेंड़ी, झगड़ा-झंटा
करते, नित अनबन
लौटा दो......................॥6॥

कोहराने-लोहराने जाना
धोबी-धरिकारों को बुलाना
बरइ-नाई का घर आना
बंद हुआ प्रचलन
लौटा दो......................॥7॥

मङरु कक्का की वो मड़ैया
खरिहाने की रात जुन्हैया
भिनुसारे में रम्हाती गैया
नहीं है वो मधुबन
लौटा दो......................॥8॥

चूल्हा, चक्की, मूसर, ओखरी
पनघट ना, कुएँ पे रसरी
सोहर, पचरा, कजरी की धुन
का तो हुआ गमन
लौटा दो......................॥9॥

गुल्ली-डंडा, कुश्ती-कबड्डी
नहीं खेलते बने फिसड्डी
दंगल, मेला नहीं, अखाड़ा
गाँव हुआ बेदम,
लौटा दो......................॥10॥

गँउवाँ की ओरियाँ

चल-चली आव गँउवाँ की ओरियाँ
जीवन जहाँ के रवानी में,
छोड़ऽ शहरिया क धमाचौकड़ी
जीयऽ! उहाँ मनमानी में,
चल-चली आव....................॥

भोरवँइ उठि के गइया चरावँइ
बंशी बजावँइ बनवाँ में,
खेतवा जोतत बैला क घुँघुरू
बजाइ झुनक-झुन कनवाँ में
अपने धुन में मगन किसनवाँ-2
गावइ गीत निज बानी में
चल-चली आव....................॥

गुल्ली-डंडा लड़िका खेलँइ
लड़की खेलँइ बटुरिया सुटुक्क
लुक्का-छिप्पी खेलँइ जवनके
अँखिया से बात करइँ चुप्पइ-चुप्प
नदिया नहाए गउवाँ की गोरिया-2
जइसे मछरिया पानी में,
चल-चली आव....................॥

बौरल आम गमा-गम-गमकइ
थिरकइ सबके चरनवा रे
महुआ के फुलवा मह-मह महकइ
डोलइ सबके मनवा रे
मातल घूमइँ गँउवाँ के लोगए
नाचँइ फगुनी जवानी में
चल-चली आव....................॥

फूली सरसों पे चढ़ि के मटरिया
झूमइ पुरबी बयरिया में
पाकल चनवाँ रहरिया बजावइ
घुँघुरू खेत-खेतरिया में
गउवाँ क मटिया सोना उगिलइ
देख चली खरिहानी में,
चल-चली आव....................॥

गन्ना क रसवा पकावइ पतरकी
फइली महकिया कछारे में
बूढ़ा थमावँइ बुढ़ऊ के हुँक्का
कौड़ा सजावँइ ओसारे में
गउवाँ क जिनगी सरग से सुन्दर
खुली हवा दाना-पानी में
चल-चली आव....................॥

नीक लागे गॅऊवॉ

नीक लागे गऊवाँ चारिउ ओरियाँ मोर बबुआ-2
गउवाँ हउअइ यहिं जहनवा क छोर बबुआ
नीक लागे गऊवाँ..................................॥

भोरवाँ मुर्गा बोले बोली, चिरई चहँकइ चारिउ ओरी-2
दिनवाँ कोयल रस घोली, पिउ-पिउ पपिहा कइ ठिठोली-2
सँझवा कबहूँ कबहूँ बनवाँ बोले मोर बबुआ,
नीक लागे गऊवाँ..................................॥

भोरवाँ बहेला बयार सुख क होला भिनुसार-2
दिनवाँ शीतली बयार, दुख क होला सब निसार-2
रतियाँ बहइ पुरवइया झकझोर बबुआ
नीक लागे गऊवाँ..................................॥

खेतवाँ पीली सरसों फूली, बलिया जौ-गेहूँ की झूली-2
चनवा मटरे कइ हमजोली, अरहर झूमइ मद में भूली-2
तोरिके उँखिया चूस, होव रसबोर बबुआ,
नीक लागे गऊवाँ..................................॥

सगरे गउवाँ पेड़वा छाए, महुआ, आम बउराए-2
कटहल, बड़हल फरि आए, जामुनि जियरा ललचाए
छहनाँ निमियाँ, पीपर बरगदे कइ जोर बबुआ,
नीक लागे गऊवाँ..................................॥

आलू-भाँटा-गोभी बोये, नेनुआ, लौकी मड़हा सोये-2
कोहड़ा ककड़ी खेतवा ढोये, पालक भिंडी सब पिरोये-2
इहँवा गाजर-गंजी-मूली, नाहीं थोर बबुआ
नीक लागे गऊवाँ..................................॥

दलहन-तिलहन अउ मासाला, नाहीं इहँवा बा कसाला-2
घर-घर हइलें सब्जी वाला, खुश हैं लरिका बुढ़ऊ बाला-2
सबमें आला गऊवाँ देशवा क भोर बबुआ,
नीक लागे गऊवाँ..................................॥

आपन सुराज

सुन-सुन गउँवाँ वाले, सुख कइ खबरिया
'आपन सुराज' आयल तोहरी दुआरिया।

ऊँच-नीच बड़-छोट नाहीं गोहरइबइ
मिलि-जुलि काम कइके भरि पेट खइबइ,
सच्चा ग्रामराज आयल तोहरी बखरिया,
आपन सुराज...,.........................।

दूसरे के आगे नाहीं हॉथ फइलइबइ
उपरॉ क शासन इहीं गॅउवॅइ में बनइबइ
ग्राम सरकार में आधी रहिहॅइ मेहरिया
आपन सुराज..............................।

अन्न, धन, वस्तु, श्रम से कोश एक बनइबइ
गाँव क विकास होई झगड़ा खुद निपटइबइ
सुख क समाज होये गली हर डगरिया
आपन सुराज..............................।

ग्रामोदय रंग

मन में तरंग तोरे
होली का है रंग छोरे
कविता का भंग मोरे
पी के इतराइये ॥

मन में तंरग है जी
होली का ये रंग है जी
कविता का भंग है जी
थोड़ी पी जाइये ॥

रंग औ गुलाल खेलों
घर-ससुराल खेलो
कविता दो-चार झेलो
तभी कहीं जाइए ॥

गुरु के चरन छू लो
भाइयों से गले मिलो
बहनों से अशीश ले लो
तभी कहीं जाइये ॥

कुल की तूँ आन बनो
सबका सम्मान करो
देश की तूँ शान बनो
जहाँ कहीं जाइए ॥

विश्व की तूँ आस बनो
गाँवों का विकास करो
ग्रामोदय की कल्पना को
मन में गठियाइए ॥

माना कविता तूँ झेली
मेरी बात मन में ले ली
किंतु एक और कहा
मेरी मान जाइए ॥

होली का त्योहार प्यारों
मन में हो प्यार यारों
आदमी हो आदमी से
बैर ना बढ़ाइए ॥

बड़ों का सम्मान करो,
छोटों में तूँ प्यार भरो।
ऊँच-नीच, भेद-भाव,
सबका मिटाइए ॥

जइबइ इस्कुलवाँ

जइबइ इस्कुलवाँ मँगइदे पटरी, माई,
नाहीं जइबइ बनवाँ लियावइ लकड़ी माई,
लेले आपन कटिया तँइ धइले रसरी, माई,
नाहीं जइबइ.......................... ।

लकड़ी ढोवत मोरि ठटरी उखड़ि गइ-2
भरि पेट नाहीं मिलल जिनगी गुजरि गइ-2
पढ़बे-लिखबइ हमहूँ अऊ करबे नौकरी, माई,
नाहीं जइबइ.......................... ।

भैया नाहीं पढ़लें अउ बहिनी नाहीं पढ़ली-2
एन्हने क जिनगी इहीं लकड़ी में सड़ली-2
नाहीं जानइ चिठिया केउ बाँचइ बखरी, माई,
नाहीं जइबइ.......................... ।

सँगवाँ क लरिका कुलि जालें इस्कुलवाँ-2
हमनी के खातिर इहँवा खुलल पाठशलवा-2
उहीं पढ़बइ हमहूँ, बनइदे गठरी, माई,
नाहीं जइबइ.......................... ।

उहँवा पे लरिका कुलि सेतवँइ में पढ़लें-2
सेतवँइ में खाँइ पहिरइँ सथवँइँ में रहलें-2
सेतवँइ में जिनगी हमार सुधरी, माई,
नाहीं जइबइ बनवाँ लियावइ लकड़ी
नाहीं जइबइ.......................... ।

लकड़ी क बोझवा

लकड़ी क बोझवा जबर लागे हे गोरी,
देहियाँ तोहार अबर लागे हे गोरी
देहियाँ................................॥

दुइजी का चँदवा स चमके चेहरवा
मथवा क बेनिया से दमके लिलरवा
उपरॉ क बोझवा कहर लागे हे गोरी,
देहियाँ................................॥

मुड़वा क बोझवा अउ बाली ई उमरिया
ऊँच-नीच भुइयॉ पे लचके कमरिया
कोश भर, पग-पग डगर लागे हे गोरी,
देहियाँ................................॥

सोनवॉ स देहियाँ पसिनवॉ बहाए
पेटवा के खातिर तोर पेटवा देखाए
बल खातइ पेटवा सुघर लागे हे गोरी,
देहियाँ................................॥

देखि-देखि तोहॅके पीरे उठइ मोरे मनवॉ
रूप क खजनवॉ और विधि क विधनवा
रुपवा पे तोहरे नजर लागे हे गोरी,
देहियॉ................................॥

बरस सको तो बरसो

गर्जन से क्या तर्जन से क्या
बरस सको तो बरसो
बादल बरस सको तो बरसो।

कड़ी धूप में धरती जलती
श्वाँव-श्वाँस में पीड़ा पलती
करुणा के विहवल अन्तर को
परस सको तो परसो
बादल.......................।

चपला की यह स्वर्णिम रेखा
दृग-दृगमें विस्मय की लेखा
हरियाली के नवजीवन में
हरस सको तो हरसो
बादल.......................।

हर लो धरती का नंगापन
दिखलाओ कुछ तो अपनापन
शुष्क सरोवर के मानस को
सरसाओ खुद सरसो
बादल.......................।

बूँद-बूँद को प्यासे जन-जन
चातक दृष्टि लगाए कन-कन
सुधा वृष्टि से पुलकित कर दो
तरसाओ मत, बरसो
बादल.......................।

सही अर्थ में तूँ सागर हो
करुणा, दया, स्नेह आगर हो
चमक-धमक के बाह्य प्रदर्शन
बिसराओ अब बरसो,
बादल बरस सको तो बरसो।

पराया धन

माई नाहीं जानत रहले, बाइउ तूँ कसाई
करबिउ तूँ अइसन बेवहार हो ॥टेक॥
भइया के रखलू तूँ अपनेहि छहँवाँ, बहिनी के दिहलू निसारि हो,
सथवँइ जगाइउ माई सथवँइ सोवाइउ, सथवँइ बोलाइउ भिनुसार हो,
सथवँह नहवाइउ माई सथवँइ धोवाइउ, सथवँइ कराइउ जेवनार हो,
भैया के सथवँइ खेलाइउ-दुलराइउ, काहें टूटल मनवँइ तोहार हो,
माई नाहीं...॥

भैया अकेलइ केसे लरिहीं झगरिहीं, केसे खेलिहीं खेल-खेलवार हो।
बहरे से बाबा केसे बिटिया बोलइहीं, केसे मङ्गिहीं पानी अऊ अँचार हो।
निक नाहीं कइलू माई घर छोड़वइलू, नाहीं चाहे तोर अब दुलार हो।
भूल-चूक बाबा मोरे भैया सब भूलि जाय, चली देखी दुसरी दुआर हो।
माई नाहीं...॥

चुप रहु बेटी तनी चुप रहु बेटी, फाटेला करेजवा हमार रे,
बिटिया त हई बेटी दुसरे क धनवा, खाली हम हई रखवार रे,
विधि क विधान इहइ हवइ मोरी बेटी, नाहीं राखैं बिटिया कुँवारि रे,
अउनी-पठउनी तोर सब विधि करबइ, मन नाहीं धरे तैं गुबार रे।
मनवाँ-बचनवाँ-करमवाँ से तीनिउ लगि करे दूनौं कुल उजियार रे।
नाहीं हम कसाई तोर माई हई बेटी, ईहइ हउ जगत बेवहार रे।
माई नाहीं...॥

'कारन'

बाबा गोदियाँ खेलली, अऊ बाबा बहियाँ चलली—हाँ बाबा बहियाँ...
सँझवा के रहिया तोहार जोहली बाबा हो—तोहार जोहली-2
पानी से मछरिया निकारि दिहल बाबा हो—निकारि दिहल-2
बेटी के तूँ अपने बियाहि दिहल बाबा हो-2

माई नेहियाँ मीजलीं, अऊ माई दुधवा पियली—हाँ माई दुधवा-2
रतियाँ के निदिया तोहार रहली माई हो—तोहार रहली-2
रनियाँ के अपने बिसारि दिहलू माई हो—बिसारि दिहलू-2
धेरिया के अपने बियाहि दिहलू माई हो-2

भैया साथे खइली, अउ भैया साथे खेलली—हाँ भैया साथ-2
खेलवइ तूँ आपन बिगारि दिहल भाई हो—बिगारि-2
बहिनी के अपने बियाहि दिहल भाई हो—बियाहि-2

जुग-जुग जिय भइया लेइ मोर उमिरिया—हाँ लेइ मोरि उमिरिया
बहिनी त चलली परदेश मोरे भाई हो—परदेश मोरे भाई हो
चलिके बनाई आपन देश मोरे भाई हो-2

गीत गंगा

मेरे मनमीत

मेरे मनमीत गीत कौन-सा सुनाऊँ,
दुःखड़े सुनाऊँ या सुख को गिनाऊँ।
मेरे मनमीत..........................॥

सुख के तो पल थोड़े ऊँगली पे गिन लो,
ऊँगली पे गिनो चाहे, तुरत ही सुन लो,
दुःख के तो ढेर किस-किस को बताऊँ,
मेरे मनमीत..........................॥

सुख नाहीं मिले कभी, मेरी कही सुन लो।
दुःख मिले जो भी कहीं, सुख मान चुन लो।
दुःख को ही सुख मान, जिंदगी बिताऊँ।
मेरे मनमीत..........................॥

नाहीं दुःख मिले सदा, नाहीं सुख गुन लो,
सुख-दुःख आए-जाए, मन ही में बुन लो,
फिर भी जो दुख मिले, कविता मैं गाऊँ,
मेरे मनमीत..........................॥

मेरे मन प्रीत-रीति किससे लगाऊँ।
सुख से लगाऊँ या दुःख अपनाऊँ।
मेरे मनमीत..........................॥

धन्य मेरी जिन्दगी

रोज नए गम से परेशान हो गयी
जिन्दगी दुःखों के जैसे नाम हो गयी ॥
कर्म का ही पाठ सीखा, कर्म था ही कर रहा,
कर्म में ही जी रहा औ कर्म में ही मर रहा।
किंतु भाग्य हर जगह प्रधान हो गयी,
जिन्दगी दुःखों..........................॥

साजता रहा इसे, सँवारता सदा रहा,
ना रहे कमी कोई, सुधारता सदा रहा।
फिर भी नित कमी का, ये खदान हो गयी,
जिन्दगी दुःखों..........................॥

सोचता रहा सदा, विचारता सदा रहा,
जिन्दगी के मोड़ को, निहारता सदा रहा।
धूल झोंक आँख, में सकाम हो गयी,
जिन्दगी दुःखों..........................॥

अर्चना किया सदा, औ वन्दना किया सदा,
जिन्दगी तुम्हारे लिए, क्या-क्या मैंने ना किया।
फिर भी ये स्वयं ही, बिन लगाम हो गयी,
जिन्दगी दुःखों..........................॥

धन्य मेरी भाग्य, धन्य कर्म मेरी जिन्दगी,
क्या करूँ मैं अर्चना, करूँ मैं किसकी वन्दगी।
चल रही है फिर भी ये विराम हो गयी,
जिन्दगी दुःखों..........................॥

जिन्दगी का कर्ज

जिन्दगी का कर्ज ढोना पड़ रहा है,
हर गमों को हँस के धोना पड़ रहा है।
जिन्दगी का कर्ज....................॥

देखते हो तुम जिसे खुशहाल वो,
है कहीं दुःख-दर्द से बेहाल वो।
अश्क से पलकें भिगोना पड़ रहा है,
जिन्दगी का कर्ज....................॥

कौन अपने हैं पराये कौन हैं,
बोलते थे हँस के वे अब मौन हैं।
दर्द के रिश्ते सँजोना पड़ रहा है,
जिन्दगी का कर्ज....................॥

दर्द अपने औरों से हम क्या कहें,
अपने आँसू अपनी आँखों से बहें।
अब तो जीना खुद ही मरना पड़ रहा है,
जिन्दगी का कर्ज....................॥

कल जिसे तिनका समझ ठुकरा दिया,
आज वह मँझधार में बेड़ा बना।
पोत जीवन का किनारे सड़ रहा है,
जिन्दगी का कर्ज....................॥

बिन मौसम बरसात

बुझे ग्रीष्मजनित प्यास
भरा कूप आस-पास
लगी कुएँ में आग,
पानी क्या करे-2

पड़े सावनी फुहार,
बहे नदी-नद-नार,
मरे प्यास से पपीहा,
पानी क्या करे-2

धवल चाँदनी की रात
मेघ लड़े बिन बात
बिना मौसम बरसात,
पानी क्या करे-2

चाहे जैसे चाहो जी लो
जो भी मिले वही पी लो-2
धोबी जल में मरे प्यास,
पानी क्या करे-2

लिए जीवन की आस
जीव मद में लेता साँस
मिली कुएँ में भाँग,
पानी क्या करे-2

अपने को पहचान लिया

जीवन के सुख-दुःख में जी के
जीवन को मैं जान लिया।
जो कुछ खोया-पाया सबको
विधि-विधान ही मान लिया।
जीवन के......................॥

ना कुछ कहना औरों से है,
नहीं शिकायत अपनों से।
अपनों में जो भूल चुके थे
अपने को पहचान लिया।
जीवन के......................॥

स्नेह-प्रेम रिश्ते-नाते सब
यार-प्यार व्यापार हुआ
जिसका जब तक जिससे मतलब
तब तक उसने मग्न लिया
जीवन के......................॥

रंग-रंग के लोग यहाँ हैं
बहुरंगी है ये दुनिया
गिरगिट जैसे रंग बदलते
लोगों को पहचान लिया।
जीवन के......................॥

धूप छाँव

पेड़वा-पेड़वा छहँवाँ तकले
बिचवँइ घमवा क अकाश रहा।
मधुमास क आस लगाय रहे
पतझड़ उपहास क भास न था।

जहँ रेत धरे पनिया परिखे
उहँवँइ मृगछाँह अथाह रहा।
बरखा-बरखा नदिया बहली
पपिहा बुनिया के पियासि मरा।

रतियाँ चँदवा क हुलास रहा
तुरतइ बदरा क विकास भवा।
भोरवँइ उठि रामहिं राम जपे
दिन रावन ही का सुराज मिला।

कविता रचतइ दिन-रात कटी
कविता में मिटा दुःख नाहीं बँटा
कविता बनली **कविराज** बना
धनिभाग जो आज समाज मिला।

इसको देखो

इसको देखो ये कैसे जीता है,
इतनी कच्ची उमर में पीता है।
पी के हँसता है, कभी रोता है,
धूल कीचड़ में सना सोता है।
कभी उठता है, कभी गिरता है,
आके मस्ती में कहीं भिड़ता है।
पैग दो पैग से, अधिक भी नहीं,
फिसलती है जुबाँ, कहीं की कहीं।
इसके जीने का गजब पैमाना,
मय को छूआ न देखा मैखाना।
कहें **'योगेश'** क्या अन्जाने को,
मय की बात नहीं, माँ को अपनी पीता है।

स्नेह बंधन

जो मेरे स्नेह में बँधे होते-2
क्या मेरे पास से परे होते ॥

मेरी यादों में जाग के तुम भी-2
रात सपनों में उठ खड़े होते ॥

याद मेरी तुम्हें सताती जब-2
साथ तारों के ही चले होते ॥

जो मेरे प्रीति की खबर होती-2
क्या मेरे पास ना पड़े होते ॥

जो मेरे मीत तूँ सगे होते-2
क्या मेरी जिद पे तूँ अड़े होते ॥

जानते बेवफा अगर तुमको-2
आ के चरणों में गिर पड़े होते ॥

मुक्तक

(1)

सोचा था दुनिया में हम भी जियेंगे,
गरल जो मिलेगा खुशी से पियेंगे।
मगर फैसला यह उन्हें है सताया,
गरल में सुधा को उन्होंने मिलाया ॥

(2)

उन्हें डर था गर जिन्दगी यूं जिएगा,
गरल को सुधा मान यूँ ही पियेगा।
तो थोड़े दिनों में ही होगा ये शंकर,
नहीं तो 'पुरुष-विष' बनेगा भयंकर।

(3)

कविता निज की, वनिता पर की,
सुता आपन नीक, लगैं सबहीं को।
कविता पर की, वनिता निज की,
हर पूत लगें निक काहू सुधी को ॥

(4)

निन्दक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय,
जब कबहूँ मौका मिले, काटि लेहु जरियाइ।
काटि लेहु जरियाइ, कबहूँ पनपै नहिं पावै,
जउ तनिकौ अँखुवाइ तुरन्तइ धार लगावइ ॥

देशवा हमार

अरे रऽ-रऽ थाम्ह हमसे नाहीं ई थम्हात बाय,
देशवा हमार नरके में चला जात बाय,
देशवा..............................॥
हाल ब हवाला क अऊ चाल ब घोटाला क,
रोजइ कछु दिवाला कइ खबरिया सुनात बाय।
छिनरन कइ डोलिया में कन्हवा दिखात बाय,
देशवा..............................॥
अब तक गाइ-गोरु खात रहलें चारा,
दुधवा पीयत रहा मनई बेचारा।
अब क मनइया चरागाह खात बाय,
देशवा..............................॥
केहु तारकोल पीयइ, केहु खाइ यूरिया,
केहु पेटरोल पीयइ, गजबइ ई दौर बाय।
का करॅइ बेचारे गेहूँ, महँगा बिचात बाय,
देशवा..............................॥
रोटिया के खातिर कहुँ बिटिया बिचात बाय,
खुनवा में सनी कहुँ रोटिया दिखात बाय।
रुखी-सूखी रोटियउ प पपियन क लात बाय,
देशवा..............................॥
देइ गये 'जैन महावीर' उपदेशवा,
तबहू न सुधरा ई चोरवन क देशवा।
जैन के डयरिया से सबहीं डेरात बाय,
देशवा..............................॥
आन्हर माई-बाबू बाटें बउरहा बा भइया
केकरे भरोसे खेई मॅजधारे नइया।
बॅचऽ! पतवार अब चोरवन के हॉथ बाय,
देशवा..............................॥

मेरे मालिक

मेरे मालिक तेरा दुनिया में अजब लेखा है,
जिसको देता है तूँ भरपूर खूब देता है।
सारी दुनिया की दौलत उसी को देता है,
जिसको देता है.........................।

कार-बँगला है दिया, टी.बी., बी.सी. तूँ दिया,
ए.सी., डी.सी. है दिया, बच्चे, बीबी तूँ दिया।
मान सम्मान दिया, हर जगह नाम किया,
काम और दाम दिया, दौलत की खान दिया।
कोई कोना नहीं खाली है, फिर भी देता है,
जिसको देता है.........................।

रात लंदन में कटे, प्रात स्विसलैण्ड हटे,
शाम को इण्डिया में, तेरे कर्णधार डटे।
फूलों का हार मिला, देवों सा प्यार मिला,
राज दरबार मिला, घर-संसार मिला।
अपनी झोली के सारे माल उसको देता है,
जिसको देता है.........................।

उसने है पाप किया, तूने है पुण्य दिया,
उसने अन्याय किया, तूने है न्याय दिया।
भूखों का खून पिया, तूने है जाने दिया,
लाखों का खून किया, तूने है जीवन दिया।
तेरी मूरत को भी सरेआम उसने बेचा है,
जिसको देता है.........................।

उसने अबला को लूटा, तेरी नजरों से छूटा,
सारी दुनिया को लूटा, तेरा बेटा है छूटा।

सारे पाखण्ड किए, तूने ना दण्ड दिए,
सबको पाबंद किए, उसको निर्द्वन्द्व किए।
आंखें तू खोल, दुर्योधन वो तेरा बेटा है,
जिसको देता है..........................।

सो न जाए जवानी

रोशनी में निशा हम छुपाने लगे,
मिल गयी जो खुशी गम ठिकाने लगे।
आज आजाद हैं, जिनके बलिदान से,
उनकी बलिदानी गाथा भुलाने लगे।

अपने सच से अब हम, मुँह छिपाने लगे,
अपने कद को हम, ऊँचा दिखाने लगे।
आज आबाद हैं जिनकी बरबादी पर,
उनकी बरबादी को हम भुलाने लगे।
उनकी बलिदानी.......................॥

गांधी, आजाद भी अब बेगाने लगे,
बाग जलिया में महफिल सजाने लगे।
राष्ट्र आकाश अपना तना जिनसे है
उनके यशगान से जी, चुराने लगे।
उनकी बलिदानी.......................॥

है समय कम उन्हें भी बताने लगे,
दे के दो दिन उसे भी भुनाने लगे।
आज मेला लगा जिनकी बलिवेदी पर,
उन शहीदों को अपनी सुनाने लगे।
उनकी बलिदानी.......................॥

हम वतन ना अंधेरे में भटके कहीं,
मन-वचन कर्म मेरा न अटके कहीं।
सो न जाए जवानी कहीं देश की,
जागरण के लिए गीत गाने लगे।
उनकी बलिदानी.......................॥

मूल्य बलिदान का कोई होता नहीं,
पाके अवसर भी कोई है खोता नहीं
आज अवसर मिला सब समर्पित करें
भावना के सुमन सब चढ़ाने लगे।
उनकी बलिदानी.......................॥

आजाद हैं

आजाद हैं 'आजाद' को हम याद रखेंगे
इस देश की आजादी को आबाद रखेंगे
आजाद हैं................................।

उपवीत मूँछ तंग बदन दीप्ति कान्ति थी
दुश्मन को खदेड़े बिना न उन्हें शान्ति थी
इतिहास के पन्नों में यही नाम लिखेंगे
आजाद हैं................................।

गोरों के जुर्म सहके भी न आह कहा था
कोड़ों की मार सहके भी इंकलाब कहा था
उसकी मधुर स्मृति में गीत आज रचेंगे
आजाद हैं................................।

फांसी के तख्त हँसते हुए झूले थे बहुत
गोली से देह वीरों के छलनी हुए बहुत
पर अपने हाथों मौत उसकी याद रखेंगे
आजाद हैं................................।

निज गौरव ध्वज

गणतंत्र दिवस जब आता है,
निज गौरव ध्वज लहराता है।
देशानुराग मुस्काता है,
मन फूला नहीं समाता है।
गणतंत्र दिवस जब..........॥

जनतंत्र स्वप्न साकार बना,
उन्नति का नव आधार बना।
यह भारत के जन-गण-मन में
मंगल की ज्योति जलाता है।
गणतंत्र दिवस जब..........॥

रावी तट का संकल्प सुदिन,
इस दिन ही दूर हुआ दुर्दिन।
अगणित बलिदानी वीरों की,
यह गाथा हमें सुनाता है।
गणतंत्र दिवस जब..........॥

यह मनभाया है नव विहान,
था बना इसी दिन संविधान।
अपनी माटी की महिमा का,
संदेश हमें दे जाता है।
गणतंत्र दिवस जब..........॥

है राष्ट्र पर्व यह राष्ट्र दिवस,
गाते सब राष्ट्रगीत हँस-हँस।
परतंत्र मुक्त निज एकतंत्र की,
गरिमा हमें बताता है।
गणतंत्र दिवस जब..........॥

मंगल पावन यह शुभ बेला,
सब जाति धर्म का है मेला।
यह हम सब भारत वासी को,
आपस में गले मिलाता है।
गणतंत्र दिवस जब..........॥

हिन्दी का गुणगान करें

हिन्द देश के वासी हम सब, हिन्दी का सम्मान करें,
हिन्दुस्तान की माटी में, नित हिन्दी का गुणगान करें।
हिन्दुस्तान की माटी.......................................॥

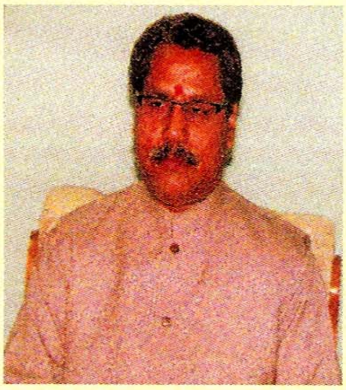
हिन्दी ने 'तुलसी' को, कविगुरु का दर्जा दिलवाया था,
हिन्दी ने ही अमर सर्जना, रामचरित करवाया था।
हिन्दी की इस रामकथा का, आओ मिलकर गान करें,
हिन्दुस्तान की माटी.......................................॥

'सूरदास' को दिव्यज्योति से, युक्त कराया हिन्दी ने,
'दास कबीरा' की पंचम खिचड़ी, पकवाया हिन्दी ने।
'मीरा' की वाणी हिंदी में, गिरिधर का आह्वान करें,
हिन्दुस्तान की माटी.......................................॥

संस्कृत की दुहिता हिन्दी ने, उर्दू अंगीकार किया,
अंग्रेजी को गले लगाया, सब भाषा को प्यार दिया।
देश-विदेश की भाषा हिन्दी, को भारत में आम करें,
हिन्दुस्तान की माटी.......................................॥

राम-रहीम की भाषा हिंदी, हिन्दू-मुस्लिम एक कहो,
वर्ग-जाति सब प्रान्त राष्ट्र के, हिन्दी में मिल एक बहो।
हिन्दुस्तान का मतलब हिन्दी, सब जन इसे प्रणाम करें,
हिन्दुस्तान की माटी.......................................॥

● ● ● ●



प्रो. योगेश चन्द्र दुबे

जन्म : 1 मार्च, 1960, ग्राम–मैनसिल (गुलजारगंज) जौनपुर (उ.प्र.) के यशस्वी माता-पिता–श्रीमती सावित्री देवी–पं. श्री वंशराज दुबे के आँगन में पल-बढ़कर बड़ा हुआ।

शिक्षा : एम. ए., डी. फिल्., डिप् (लिंग्विस्टिक्स), डी. लिट्. (मानद)

प्रकाशित ग्रंथ : (1) रामायणमंजरी का साहित्यिक अनुशीलन, (2) सूक्ति सुधा, (3) बीसवीं शती के प्रमुख संस्कृत महाकाव्यों में चित्रित भारतीय स्वाधीनता संग्राम, (4) ग्राम्य गीतांजलि–(गीत काव्य) (5) हनुमानधारा (खण्डकाव्य), (6) रामकथामंदाकिनी (शोध-निबंध संग्रह), (7) ईशावास्योपनिषद् (सारस्वती टीका), (8) भाषाविज्ञान की रूपरेखा, (9) विकलांग दर्शन, (10) महाकवि स्वामी रामभद्राचार्य जी का संस्कृत वाङ्मय को अवदान।

अध्यापन : सन् 1987 से संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अध्यापन यात्रा प्रारंभ कर महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.) में यशस्वी शिक्षक के रूप में विख्यात होकर जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ. प्र.) में 1 अगस्त 2001 से संस्कृत आचार्य एवं विभागाध्यक्ष तथा कला संकाय के अधिष्ठाता के रूप में पदस्थ।

प्रशासनिक अनुभव : कुलपति, प्रति कुलपति, कुलसचिव, अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, प्रभारी आचार्य पुस्तकालय, मुख्य कुलानुशासक, छात्र कल्याण अधिष्ठाता एवं शोध निदेशक आदि विभिन्न शैक्षणिक एवं प्रशासनिक पदों पर कार्यानुभव।

पुरस्कार : अलंकरण : साहित्य कला शिरोमणि, साहित्य महोपाध्याय, अवध भारती भूषण, तुलसी भारती समलंकरण, कवि रत्न, सर्वश्रेष्ठ शिक्षक सम्मान, राष्ट्रीय शिक्षा रत्न, पूर्वांचल विद्वद्-रत्न, अक्षय गौरव सम्मान, साहित्य रत्नाकर, शताब्दी सम्मान, हेल्प यू अवार्ड, उ.प्र. रत्न सम्मान आदि।

सम्प्रति : कुलपति, जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ.प्र.) पिन-210204

स्थायी निवास : 'सारस्वतम्' संत कबीर मार्ग, जानकीकुण्ड, चित्रकूट (उ.प्र.) पिन-210204

मोबाइल : 09452032221, 07509687119

ई-मेल : profyogeshdubey@gmail.com.